thearyasamaj.org

ओ३म्

सुधारक

गुरुकुल झज्जर का लोकप्रिय मासिक पत्र

वर्ष ६२ अंक २ अक्तूबर २०१४ कार्तिक २०७१ वार्षिक मूल्य १०० रु०

जीवनभर मानवजाति को अज्ञानान्धकार से हटाकर ज्ञानसूर्य से आलोकित करने वाले।

— मृत्युंजय ऋषिवर दयानन्द सरस्वती

स्वयं बुझा दिवाली के दिन, पर जग को ज्योतिर्मय कर गया

संस्थापक : स्व० स्वामी ओ३मानन्द सरस्वती
प्रधान सम्पादक : आचार्य विजयपाल
सम्पादक : विरजानन्द दैवकरणि
व्यवस्थापक : ब्र० राहुल आर्य

thearyasamaj.org

कुलपति डॉ० सुरेन्द्र कुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' सम्मान

सामाजिक एवं औद्योगिक संस्था 'देव विमल हर्बल हैरिटेज एण्ड एजुकेशनल सोसायटी' देहरादून की ओर से एक भव्य अलंकरण समारोह में दिनांक 14 सितम्बर 2014 को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के कुलपति डॉ० सुरेन्द्रकुमार को 'उत्तराखण्ड गौरव' के सम्मान से सम्मानित किया गया। डॉ० सुरेन्द्र कुमार को यह सम्मान वैदिक शिक्षा, संस्कृत भाषा, वैदिक साहित्य के लेखन एवं प्रचार-प्रसार में उल्लेखनीय योगदान करने के फलस्वरूप दिया गया। यह भव्य अलंकरण समारोह हिमालयन पब्लिक स्कूल, देहरादून में सम्पन्न हुआ जिसमें अध्यक्ष के रूप में हिमालयन ड्रग्स के अध्यक्ष एवं उद्योगपति डॉ० एस० फारूख, मुख्य अतिथि ले० जन०, एच०बी० काला, विशिष्ट अतिथि डॉ० वी०के० जैन कुलपति दून विश्वविद्यालय, सोसायटी के अध्यक्ष श्री हर्षवर्धन आर्य एवं सचिव डॉ० आदित्य आर्य उपस्थित थे। इन्होंने कुलपति जी को स्मृतिचिह्न, अभिनन्दनपत्र आदि देकर सम्मानित किया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के शिक्षक, शिक्षकेतर एवं विद्यार्थी वर्ग ने इस सम्मान को पाने पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष में उत्तराखण्ड की ओर से डॉ० सुरेन्द्र कुमार को यह दूसरा सम्मान प्राप्त हुआ है। इससे पूर्व इन्हें 'ऑल इंडिया कांफ्रेस ऑफ इंटलेक्च्वल सोसायटी, दिल्ली' की ओर 'उत्तराखण्ड रत्न' अलंकरण से सम्मानित किया गया था।

डॉ० प्रदीप जोशी

जनसूचना अधिकारी

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

thearyasamaj.org

सुधारक के नियम व सविनय निवेदन

1. सुधारक का वार्षिक शुल्क 100 रुपये है तथा आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रुपये है।
2. यदि सुधारक 20 तारीख तक नहीं पहुंचता है तो आप व्यवस्थापक सुधारक के नाम से पत्र डालें। पत्र मिलते ही सुधारक पुनः भेज दिया जाएगा।
3. वार्षिक शुल्क तथा आजीवन शुल्क मनीआर्डर द्वारा **'व्यवस्थापक सुधारक'** के नाम भेजें। सुधारक वी.पी. रजिस्ट्री द्वारा नहीं भेजा जाएगा।
4. लेख सम्पादक सुधारक के नाम भेजें, लेख छोटे, सरल, संक्षिप्त, सारगर्भित तथा मौलिक होने चाहिएं तथा स्पष्ट, शुद्ध एवं सुन्दर लेख में कागज के एक ओर लिखे जाने चाहिएं। अशुद्ध एवं गन्दे लेखवाला लेख नहीं छापा जाएगा। लेखों को प्रकाशित करना न करना तथा उनमें संशोधन सम्पादक के अधीन होगा। अस्वीकृत लेख डाक-व्यय प्राप्त होने पर ही वापिस भेजे जाएंगे।
5. सुधारक में विज्ञापन भी दिए जाते हैं, परन्तु विज्ञापन शुद्ध एवं वास्तविक वस्तु का ही दिया जाएगा।
6. यह सुधारक मासिक पत्र समाजसुधार की दृष्टि से निकाला जाता है। इसमें आपको धर्म, यज्ञकर्म, समाजसुधार, देश व समाज की स्थिति, ब्रह्मचर्य, योगासन आदि विषयों पर लेख पढ़ने को मिलेंगे।
7. सुधारक के दस ग्राहक बनानेवाले सज्जन को एक वर्ष तक निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा पचास ग्राहक बनानेवाले सज्जन को दो वर्ष निःशुल्क सुधारक भेजा जाएगा तथा उसका फोटो सहित जीवन परिचय सुधारक में निकाला जाएगा।

–व्यवस्थापक

वर्ष : 62 अंक : 2

अक्तूबर 2014 विक्रमाब्द 2071

दयानन्दाब्द 190 कलिसंवत् 5115

सृष्टिसंवत्-1,96,08,53,115

विषय-सूची

क्र.सं.	विषय	पृष्ठ
1.	वेदोपदेश	2
2.	सम्पादकीय	3
3.	सर्वगुण-सम्पन्न महर्षि दयानन्द	4
4.	ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या	7
5.	ब्रह्मचारी सत्यनिष्ठा से मृत्युविजयी....	9
6.	सांझी सोच का सुख	11
7.	हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने.....	12
8.	मांसाहार के तर्क	14
9.	अप्रैल १९३५ में गुरुकुल झज्जर की...	16
10.	अग्रवाल और लक्ष्मी	18
11.	गुरु विरजानन्द दण्डी	19
12.	मारवाड़ का भीषण पाप	21
13.	समाचार प्रभाग	24

सुधारक मासिक पत्र का वार्षिक शुल्क १०० रुपये भेजकर स्वयं ग्राहक बनें और दूसरे साथियों को भी ग्राहक बनाकर सुधार कार्य में सहयोग दीजिये।

-व्यवस्थापक सुधारक

thearyasamaj.org

वेदोपदेश

१९. चैत्र

चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम्।
यज्ञं दधे सरस्वती।।

ऋ० १.३.११।।

विनय

जिन्होंने अपने जीवन को यज्ञ बनाया है वे जानते हैं कि इस जीवन-यज्ञ को जहां अन्य (परमेश्वर के शक्तिरूप) देवों ने धारण कर रखा है वहाँ सरस्वती देवी ने भी इसे धारण किया हुवा है। यह देवी दो कार्य कर रही है। यह एक तो 'सूनृता' वाणी को प्रेरित करती है और दूसरी सुमतियों को जगाती रहती है। सूनृता उस वाणी का नाम है जो कि सच्ची और प्यारी होती है। केवल प्रिय वाणी तो किसी काम की है ही नहीं किन्तु केवल सच्ची वाणी बोलना भी अधूरा है। सत्य के साथ वाणी में अहिंसा भी रहे तभी वाणी पूरी होती है और तब वाणी में प्रेम भी आ जाता है। सरस्वती देवी हम लोगों में ऐसी सत्यमयी और मधुर वाणी को प्रेरित करती रहती है। इस कारण हमारा जीवन-यज्ञ अभग्न चलता है। और इसके अतिरिक्त यह सरस्वती देवी इस यज्ञ के एक ऐसे अन्य गहरे और सूक्ष्म अंग को भी निबाहती है, जब कि यह हममें निरन्तर श्रेष्ठ, सुन्दर, कल्याणकर, बुद्धि (ज्ञान) को जगाती है। जब जीवन-यज्ञ ठीक चल रहा होता है तो अन्दर सरस्वती देवी हममें शुभ, सबकी कल्याणकारी, हितकारी बुद्धियों को ही उत्पन्न करती हुई और हमारी वाणी से सच्चे और प्रेममय वचनों का ही प्रवाह बहाती हुई होती है। अतः जब कभी हमारे मन में कोई दुर्मति उत्पन्न होवे, हमारा मन किसी के लिये अहित व अनिष्ट सोचे तो समझलो कि सरस्वती देवी ने हमें छोड़ दिया है। जब कभी हम अनृत या कठोर (हिंसक) वचन बोलें तो समझ लो कि सरस्वती देवी हमारे जवन की यज्ञशाला से उठ गई है। हमें फिर सुमति और सुनृता वाणी का संकल्प करके अपने हृदयासन में सरस्वती देवी को बिठलाना चाहिये, और इस यज्ञ-भंग के लिये प्रायश्चित्त करना चाहिए।

हम प्रायः समझते हैं कि सरस्वती देवी का प्रसाद पढ़ना लिखना आ जाना है। पर यह नहीं है। यदि किसी की हृदय में निरन्तर सुमति की धारा बहती हो और उसकी वाणी से सत्यमय और मधुर वचनों का ही अमृत झरता हो तो वह मनुष्य चाहे बिल्कुल निरक्षर हो तो भी उसमें निश्चय से सरस्वती का वास है, जो कि उसके जीवन-यज्ञ को धारे हुवे चला रही है।

शब्दार्थ—

(सूनृतानां) सच्ची और प्यारी वाणी को **(चोदयित्री)** प्रेरित करती हुई **(सुमतीनां)** और अच्छी बुद्धियों को **(चेतन्ती)** चेतानी हुई **(सरस्वती)** सरस्वती **(यज्ञं)** यज्ञ को **(दधे)** धारण किये हुवे है।

(—वैदिक विनय से)

thearyasamaj.org

सम्पादकीय....

मा बिभेर्न मरिष्यसि

संसार में प्रत्येक प्राणी सदा जीना चाहता है, मृत्यु का नाम सुनकर बहुत भयभीत होजाता है। शास्त्रों में यह भय अभिनिवेश नाम से अभिहित किया गया है। विद्वान् की इस भय से वंचित नहीं हैं, पुन: सामान्यजनों का तो कहना ही क्या।

जिसने शरीरधारण किया है, उसकी मृत्यु अवश्य ही होगी, इसके पंजे से कोई प्राणी नहीं बच पाया है। जो इस शरीर से ममत्व जोड़कर रहते हैं वे बन्धन में बंधे रहते हैं और मृत्यु के समय जब प्राण शरीर से वियुक्त होते हैं तब ऐसे व्यक्ति रोते हैं, मरना नहीं चाहते। परन्तु अवश्यंभावी मृत्यु के आगे मानवेच्छा नहीं चलती।

जो व्यक्ति इस शरीर को संसारयात्रा का साधन मानते हैं तथा मृत्यु को परमात्मा की ओर से दिया गया कर्मफल स्वीकार करते हैं वे शरीर छोड़ते समय कष्ट का अनुभव नहीं किया करते अपितु स्वेच्छा से ईश्वर की दी हुई शरीररूपी गाड़ी से उतर जाते हैं क्योंकि उनकी इस जन्म की यात्रा का अवसान यहीं तक तथा इसी समय होना था।

सभी लोग भलीभाँति जानते हैं कि एक दिन हमें अवश्य मरना है, पुनरपि जिजीविषा बनी ही रहती है। इसीलिए यक्ष को उत्तर देते हुए धर्मराज युधिष्ठिर जी ने कहा था- **अहन्यहनि भूतानि गच्छन्ति यममन्दिरम्।**
शेषा: स्थिरत्वमिच्छन्ति किमाश्चर्यमत: परम्।।

(महाभारत)

हम प्रतिदिन लोगों को मरता हुआ देखते हैं पुनरपि बचे हुए लोग अपनी सदा स्थिरता चाहते हैं इससे बढ़कर और आश्चर्य क्या हो सकता है।

मृत्यु तथा उससे उत्पन्न भय से छूटने का उपाय मानव आदिकाल से ही करता आया है, जो इस उपाय को पूर्णतया कर पाया वही मृत्यु और उसके भय को पार कर गया। इस भय से मुक्ति का एकमात्र साधन है-ईश्वरप्राप्ति।

योगाभ्यास और मुक्ति के उपायों के द्वारा ऋषि लोग मृत्यु को जीतते आए हैं। महाभारतकाल के राजर्षि भीष्म तथा इस युग के मृत्युञ्जयी महर्षिदयानन्द का प्रमाण सबके सम्मुख है। इन्होंने योगाभ्यास के द्वारा ईश्वर को प्राप्त कर लिया था अतएव उसे स्मरण करते हुए जब चाहा तब शरीर छोड़ दिया। इसीलिए अन्तिम समय तक प्रसन्नचित्त रहते हुए धर्मोपदेश आदि भी करते रहे, क्योंकि ये लोग वास्तविक ज्ञान के कारण शरीर को मरणधर्मा जान चुके थे इसीलिए इसे त्यागते समय किंचित् भी भय, शोक और कष्ट की अनुभूति नहीं होने दी।

मृत्यो: पदं योपयन्त यदेते, द्राघीय आयु: प्रतरं दधाना:, मा बिभेर्न मरिष्यसि, जरदष्टिं कृणोमि त्वा, परं मृत्यो अनुपरेहि पन्थाम्, इमं जीवेभ्य: परिधिं दधामि, ब्रह्मचर्येण देवा, मृत्युमपाघ्नत, विश्वमायुर्व्यश्नुतम् इत्यादि वेद के वचनों से मृत्यु अवश्यम्भावी सिद्ध होती है, पुनरपि इस अवश्य होनेवाली मृत्यु को यदि स्वेच्छा से तथा ज्ञानपूर्वक ग्रहण किया जाये तो कष्ट नहीं होता। 'मुझे अभी और जीना चाहिए' ऐसा सोचनेवाले और मृत्यु को निकट आया जानकर जो भयभीत होते और रोते तथा घबराते हैं, उनके प्राण अति कष्ट से निकलते हैं। उस समय अपार धनसम्पत्ति व्यय करके भी यदि कुछ क्षण और जीना चाहता है तो वह नहीं जी सकता, यहीं आकर बड़े-बड़े वैद्य, डाक्टर, वैज्ञानिक हार मान जाते हैं और किसी अदृष्ट शक्ति के आगे अपने को सर्वथा असहाय पाते हैं।

परमेश्वर नामक उस अदृश्य शक्ति को यदि हम योगाभ्यास से प्राप्त कर लेते हैं तो अन्तिम समय सुख से प्राण त्याग कर सकेंगे। अन्यथा रोना भी पड़ेगा और प्राण तो त्यागने ही होंगे। आज से १३१ वर्ष पूर्व 30 अक्टूबर १८८३ ई. को दीवाली के दिन महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इच्छामृत्यु के द्वारा शरीर त्याग कर भयरहित होकर शरीर त्याग करने का क्रियात्मक सन्देश दिया था। आइये हम भी दीपावली के इस शुभ अवसर पर यह प्रण लें कि मृत्यु के अभिनिवेश क्लेश को वास्तविक क्लेश दु:ख के रूप में न लेकर इसे सहजरूप से लेने का यत्न करेंगे।

-विरजानन्द दैवकरणि

thearyasamaj.org

सर्वगुण-सम्पन्न महर्षि दयानन्द

-श्री धर्मबन्धु

भोले भारतवासी आंखें बन्द किये हुए अधोगति के मार्ग की ओर बड़े वेग से पग बढ़ा रहे थे। सच्चे परम पिता की अमृतमयी गोद को छोड़कर इधर-उधर भटकते फिरते ऊँचे नीचे पत्थरों से टकरा रहे थे। भारत की भविष्य सन्तान को सच्चे आभूषणों से भूषित न कर सोने और चांदी के अलंकारों से अलंकृत कर जीवन ग्रास को कराल काल के मुख में ठूँस रहे थे। बेचारी अबलाओं की अबलता पर दृष्टि न डाल बाल विवाह के कीच में सने उनके सौभाग्य की सुहाग चूड़ियां तोड़ रहे थे। अनाथों को दर-दर भटका मासूमों के करुण रव से दिशाओं को गुञ्जायमान कर रहे थे, अवाक् गौ माता के गले पर कटारी रख रक्त से रंगे हुए करों को बना रहे थे, ऊँट के गले में बकरी बाँध स्त्री से बाबा कहला कहलाकर बधिर हुए आकाश और पृथिवी को कम्पित कर रहे थे।

आज पतित पावन परम पिता कल्याणमय शिव की रात्री है। १२ बजे का पहर बीत रहा है। तस्कर गण हाथ से हाथ दिखाई देता न देख बेचारे बेसुधों के रक्त से रञ्जित अपनी अपनी जेबें गरम कर रहे हैं। इनके लिये समय भी अच्छा है क्योंकि आज तो आधी से अधिक जनता मन्दिरों में लोट पोट है। पर इस समय भी एक मन्दिर में एक ज्योति जगमगा रही है। शिव की मूर्ति पर मिठाई रक्खी है। चूहा भी सब को सोता देख उस पर आ धमका, और मिठाई को चट करने लगा मूलशंकर सोचता ही रह गया कि क्या यही शिव है जो अपनी भी रक्षा नहीं कर सकता। पिता से पूछा पर उत्तर न पा दिल में सच्चे शिव के अन्वेषण की ठान ली।

भगिनी मृत्यु-शैय्या पर पड़ी है, मूलशंकर चुपचाप निस्तब्ध खड़ा है। और रो रहे हैं। यह अपने विचार में मग्न है। कपटी काल पर विजय प्राप्ति के उद्योग में मन के घोड़े दौड़ा रहा है। लोग निर्दयी पत्थरदिल बता रहे हैं पर इसे अपनी ही धुन है। माता और पिता भरसक उद्योग कर रहे हैं पर मूल का चित्त नहीं लगता उसे एकान्त प्रिय है। पिता ने पढ़ने के लिए दूसरे ग्राम में भेज दिया वहां भी चित्त नहीं लगता। शादी करने का संकल्प दिल में दृढ़ कर लिया, शंकर के मना करने पर भी न माना। अन्त में शंकर शंकर की खोज में मृत्युञ्जय बनने की धुन में घर से निकल पड़ा।

शंकर धुन का धनी था, क्लेश और कष्टों की ती तनिक भी चिन्ता न थी, संसार से विरक्त घर वार से विरक्त। पहिचाना न जाये इसलिये संन्यास ग्रहण कर दयानन्द सरस्वती बन गया। मत - मतान्तरों की खोज करता, नाना पत्थों के गुरुओं का चेला बना, मन्दिरों में घंटे बजाये, कन्दराओं में तप किया, बर्फ पर नंगे पग फिर घुटनों से चला, पेट के बल रींगा, कांटों में धंस शरीर को छलनी-छलनी कर डाला, बियावान जङ्गल में नृसिंह ने सिंहों का सामना किया, रीछों से भेंट की, मठों के महन्तों से उनकी कुरीतियां देख विमुख हो चल दिया, परम सच्चे मूलशंकर ने मृत्युञ्जयोपाय को न पाया।

इसी प्रकार कण्टकाकीर्ण बनों को पार करते कराते दयानन्द ओखी मठ पर जा पहुँचे। वहां के महन्त ने शिष्य बन जाने पर गद्दी का स्वामी बना देने का प्रलोभन दिया, पर वह बन्धनमुक्त मस्त गज के लिये विसतंतु का काम कर सके?

स्वामी जी ऐसे ही लम्पटों की लम्पटता, धूर्त्तता, पाखण्डियों के पाखण्ड से दु:खित हो सच्चे गुरु की खोज में इतस्ततः टक्करें मार रहे थे। कहीं जन्त्र तन्त्र पुस्तकों का अवलोकन किया पर कहीं शान्ति न हुई। परमपिता परमात्मा की अत्यन्त करुणा और दया दृष्टि भारत के दुखों की ओर फिरी, भारत को सोते से जगाना था, दु:ख दर्दों को मिटाना था, लम्पटों को यम के राज्य में लिटाना था। शिष्य का मनोरथ सफल होना था, गुरु की इच्छा पूर्ण होनी थी, बूढ़े को बुढ़ापे में लाठी का सहारा मिलना था, निराशा लता में आशा के फूल लगने थे, सच्चे तपस्वी

thearyasamaj.org

के तप ने फल लाना था, पाखण्ड का खण्ड-खण्ड होना था, दयानन्द जी मथुरा में जा पहुँचे। स्वामी विरजानन्द महाराज की कुटिया खटखटाई। कुटिया के द्वार के साथ गुरु के हृदय के कपाट भी दयानन्द के लिये खुल गये। दयानन्द ने भी गुरु की आज्ञा मानने में कोई बात उठा न रक्खी। सारस्वत आदि को यमुना की भेंट कर दिया। शुद्ध हृदय से आर्षग्रंथों का अध्ययन आरम्भ कर दिया।

भक्ति में कमाल था। नित्यप्रति यमुना से घड़े भर-भर के लाते, प्रत्येक काम भक्ति से करते, किसी बात पर दण्ड देने पर गुरु के कर-कमलों को कष्ट न हो इसलिए दण्ड ला देते थे।

लौंग और इलायची से भरी थाली पास में रक्खी है, गुरु चरणों में गर्दन झुकी है, गुरु आदेश सुनने का उत्सुक है। गुरु महाराज ने आदेश किया दयानन्द मुझे तेरी इन लौंगों की आवश्यकता नहीं है। मैं कुछ और चाहता हूँ। नम्रीभूत दयानन्द ने नम्र निवेदन किया भगवन् आप की आज्ञा को प्राण रहते तक पालन करूँगा, आप आदेश करें। गुरु प्रेम भरे शब्दों में कहते हैं वत्स! मुझे ऐसा ही विश्वास था। जा! संसार के पाखण्ड को अपने जीवन और तप से खण्ड-खण्ड कर दे। दयानन्द ने गुरु आज्ञा को शियोधार्य कर चरण छू आज्ञा चाही।

हरिद्वार में कुम्भ का मेला लगा है, लाखों पाखण्डों को हरिद्वार की हर की पौड़ियों पर हर हर करके फैलाया जा रहा है, कहीं बम बम, कहीं शिव शिव, कहीं राधे कृष्ण की रट लग रही है। सुल्फे का धुआं आकाश से वार्त्तालाप कर इन धूर्त्तों के लिये बहिश्त का दरवाजा खोल रहा है, एक ओर सप्तस्रोत पर दयानन्द विराजमान है। लंगोट से फटी हुई पाखण्ड-खण्डनी ध्वजा लहरा रही है, धड़ाधड़ पाखण्ड खण्डन होरहा है पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

स्वामी जी महाराज ने प्रभाव पड़ते न देख विचारा, अपनी त्रुटि दिखाई दी। इसको दूर करने का उपाय केवल मात्र तप है, ऐसा विचार कर तीन चार साल तक चण्डी की पहाड़ियों पर घोर तप किया, कई कई दिन तक केवल एक आध बैंगन ही खाकर रहे, नंगे बदन गंगा की बालू में माघ और पौष के महीने में पड़े भगवदुपासना में मग्न रहे। ऐसे ही चैत वैशाख की कड़ी धूप भी आपने वज्र सम शरीर पर सहन की।

मथुरा के घाट पर श्री स्वामी जी खड़े मूर्ति पूजा खण्डन कर रहे हैं लोग मूर्तियों का यमुना में बहा रहे हैं परन्तु स्वार्थी अपना सर्वस्व नाश होता देख कीचड़ मिट्टी पत्थरों से स्वामी पर प्रहार कर रहे हैं पर स्वामी जी इन्हें स्वागत के पुष्प समझ उसी प्रकार बिना किसी भी खेद के व्याख्यान देते रहे।

एक बार श्री स्वामी जी लाट साहब के निमंत्रित करने पर ठीक समय उनकी कोठी पर पहँचे, बैठने के पीछे लाट साहब ने प्रश्न किया कि महाराज प्रसन्न तो हैं? स्वामी जी ने साधारणतया उत्तर दे दिया हां परमपिता का अनुग्रह है। उसने क्रमशः दो बार यही प्रश्न किया और स्वामी जी भी यही उत्तर देते रहे। परन्तु तीसरी बार पूछे जाने पर उत्तर दिया कि हाँ मैं प्रसन्न होता यदि तुम्हारे स्थान पर कोई भारतवासी होता। इसको सुन वह श्री महाराज के मुखमण्डल की आभा को देखने लगा।

अमृतसर में स्वामी जी महाराज ठहरे हुये हैं, विरोधीदल उनको मृत्युलोक की हवा खिलाने का उपाय सोच रहा है। कुछ मनुष्य इस कार्य के लिये उद्यत होगये यह जान भगवद् भक्तों की सुरक्षित स्थान में ठहरने की प्रार्थना पर संसार के रक्षक को अपना रक्षक बतला वहीं अकेले सोते रहे।

उनके बल को दुनिया जानती थी। स्वामी जी किसी नदी के किनारे स्नान कर रहे थे, बहुत से मल्ल उनकी बल परीक्षा के लिये आये, वह उनके अभिप्राय को जान अपने एक हाथ से लंगोट निचोड़ उन के हाथ में दिया और कहा लो इस में से एक बिन्दु जल ही निकाल दो, सारे मल्ल अपना-अपना बल लगा लगाकर हार गये पर एक बिन्दु भी जल न निकला।

स्वामी जी महाराज कमरे में बैठे बातें कर

thearyasamaj.org

रहे हैं, एकदम बीच में बोल उठे कि देखो अभी एक मनुष्य भोजन ला रहा है उसमें विष मिला है। वास्तव में था भी ऐसा। भक्त भोजन लाया स्वामी जी ने स्मय के साथ स्वीकार किया। थोड़ा सा निकाल कर प्रसादी के रूप में भक्त को देने लगे, भक्त घबराया, बोला ''नहीं महाराज आप के ही लिए है।''

'हां! अच्छा यह भोजन कुत्ते को भी डालो।'

भोजन डाला गया, खाते ही कुत्ता छट-पटाने लगा। भोजन लानेवाला पैरों में गिर पड़ा, दया के सागर ने क्षमा कर दिया।

एक बार एक ब्राह्मण ने भक्तिभाव से आपकी सेवा में पान का बीड़ा भेंट किया। सरल स्वभाव से श्री महाराज ने मुख में रख लिया, खाते ही विष चढ़ने लगा। महाराज ने दुष्ट को कुछ न कहा और यौगिक क्रियाओं से विष को बाहर कर दिया। सय्यद मोहम्मद वहां के तहसीलदार थे। विष देनेवाले को पकड़ लाये, महाराज ने यह कहकर छुड़ा दिया। मैं संसार में किसी को कैद करवाने नहीं आया, किन्तु सबको मुक्त कराने आया हूँ।'

स्वामी जी शास्त्रार्थ कर रहे थे, सर्पपूजक ब्राह्मण ने शास्त्रार्थ की ठानी उत्तर न आया तो एक सर्प जिसकी वह नित्य पूजा करता था महाराज जी पर यह कहते हुए फैंक दिया कि वह 'महादेव स्वयं निर्णय कर देंगे कि तुम सच्चाई पर हो या मैं। स्वामी जी ने पैरों में लिपटते सांप को सावधानी से उठाकर परे फैंक दिया और एडी से सर कुचल दिया और बोले तेरे देवता ने बहुत देर लगाई और मैंने फैसला शीघ्र ही कर दिया।

ऋषि दयानन्द अद्वितीय निर्भीक वक्ता थे। पटना में व्याख्यान हो रहा था। भारत के जंगी लाट भी महाराज की स्तुति सुनकर उपदेश सुनने आये। लोगों ने महाराज को बाईबल की समालोचना से रोकना चाहा। महाराज ने निर्भयता से बलपूर्वक बाईबिल का खण्डन प्रारम्भ कर दिया। लाट साहब ने प्रमाण किया और प्रशंसा करते हुए कहा 'ठीक है। सच्चे संन्यासी को संसार में किसी का कुछ भय नहीं।'

स्वामी जी की विद्वत्ता की धाक चहुंओं ओर छागई। आप संस्कृत के दिग्गज विद्वानों के केन्द्र काशी में पहुँचे, महाराजकाशी प्रधान बने। सैंकड़ों दिग्गज बड़े ठाठ से सामने आ डटे। शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ। साधारण से प्रश्नों पर ही काशी को अवाक् कर दिया। काशी के पण्डित धर्म का लक्षण न बता सके। सभी में सन्नाटा छा गया, तब श्री स्वामी जी ने धृत्ति क्षमा वाला मनु का लक्षण बोला, पण्डित मण्डली ने हल्ला मचाया , यह तो हम भी जानते हैं। कोई नवीन बात नहीं धोखा है। स्वामी जी ने तत्काल, कहा अच्छा 'अधर्म' का लक्षण करो, बस फिर क्या था कोई भी उत्तर न दे सका। धर्मशास्त्र से हट कर व्याकरण में आये, स्वामी जी ने 'कल्म' संज्ञा पूछ ली, बस फिर सन्नाटा। स्वामी जी से पूछा गया तो महाराज जी ने 'रलयोरभेदः' कहकर कर्म का लक्षण किया। पण्डितों की प्रतिभा ने जवाब दे दिया।

महाराज ने ब्रह्मचर्य पर व्याख्यान ही नहीं दिया, अपितु हण्टर पड़ते हुए दो घोड़ों की गाड़ी को एक हाथ से रोककर अपने ब्रह्मचर्य का अपूर्व परिचय दिया और सरदार विक्रमसिंह को चकित कर दिया। महाराज वेद के अपूर्व पण्डित थे। आप का वेदभाष्य और उसकी भूमिका इस का ज्वलन्त प्रमाण है। अपने कार्यक्रम में आपने राजाओं को भी रखा था, आप का कार्य रजवाड़ों को वैदिक धर्म का उपदेश सुनाने का था। कितने ही रजवाड़े आप के शिष्य बन चुके थे।

आप जोधपुर महाराज के यहां ठहरे थे। राजमहल में वेश्या की पालकी देख उपदेश में नरेशों को निर्भीक पर तथ्य शब्दों में फटकारा। शब्द थे — 'सिंह अब कुत्तों के समान हैं। ये वेश्यायें कुतियां हैं। कुतियों से सम्बन्ध करना कमीने कुत्तों का काम है। वीर सिंहों का नहीं। महाराज जोधपुर पर इन का गहरा प्रभाव पड़ा।

बस वेश्या और उस के साथ कुछ पाखण्डियों ने मिलकर धौड़ मिश्र रसोइये को लालच

thearyasamaj.org

दिया, उस ब्रह्महत्यारे ब्राह्मण पातकी ने १९ सितम्बर को दूध में विष मिलाकर पिला दिया। रात को भारी उदर शूल और वमन होते रहे। शरीर में भारी निर्बलता हो गयी। डाक्टर अलीमर्दान खां की दवा के असर से वह रोग और भी भयङ्कर हो गया। इनकी दवा भी भगवान् जाने क्यों जले पर नमक सिद्ध हुई। मर्ज बढ़ता गया। इधर महर्षि अभूतपूर्व दया का परिचय दिया, उस विषय देनेवाले प्राणघातक को अपने पास बुलाया, अपराध स्वीकार कराकर बोले — 'जगन्नाथ मेरे शरीर के नाश होजाने से मेरा सारा काम अधूरा रह गया, तुम जानते हो इस से लोकहित की कितनी हानि हुई। पर नहीं तुम अबोध हो तुम क्या जानो। लो ये रुपये मैं तुम्हें देता हूं, नैपाल भाग जाओ, वहीं तुम्हारे प्राण बच सकते हैं।

आहा! धन्य है क्षमा। मूल्य देकर विष पीने वाले महात्मा दिखांई नहीं देते। धैर्य के धनी क्षमा के सागर ऋषि ने मरने से पूर्व मनोमय कोष को शरीर से पृथक् कर कष्टों को सर्वथा भुला चारों वेदों के मंत्रों का उच्चारण यथाविधि किया, शरीर के घाव फट गये, मानो ऋषि के वियोग पर वह भी आंसू बहा रहे थे। ऋषि प्रसन्न थे, प्राणायाम किया। चिरकाल तक सुवर्णमयी मूर्ति की भांति निश्चल रूप से समाधिस्थ बैठे रहे। उस समय उनके स्वर्गीय मुखमंडल के चारों ओर सुप्रसन्नता प्रभात की झलमलाहट पूर्णरूप से झलमल कर रही थी। समाधि की उच्चतम भूमि से उतरकर भगवान् ने दोनों नेत्रों के पलक कपाट खोलकर दिव्य ज्योति का विस्तार करते हुए कहा — 'हे सर्वशक्तिमान् ईश्वर तेरी यही इच्छा है, सचमुच तेरी यही इच्छा है। परमात्मदेव तेरी इच्छा पूर्ण हो। अहा! मेरे परमेश्वर तैंने अच्छी लीला की।' इन शब्दों के उच्चारण करते ही, ब्रह्मऋषि ने आत्मिक प्राण को ब्रह्मरन्ध्र द्वारा परमधाम को जाने के लिये स्वर्गसोपान पर आरूढ़ कर दिया और पवन रूप प्राण को प्रणवनाद के साथ सूत्रात्मा वायु में विलीन कर दिया।

एक समकालीन इतिहासकार वर्णित —

ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या

-डॉ० भवानीलाल भारतीय

महाकवि सूरदास ने अपनी रचना साहित्य लहरी में स्वयं को महाराजा पृथ्वीराज चौहान के राजकवि चन्द्रबरदाई का वंशज बताया है। ध्यान रहे कि चन्द्र भट्ट या भाट जाति के थे जो अब गुजरात में ब्रह्मभट्ट कहलाते हैं। इन्हीं के वंश में १९वीं शताब्दी में एक विद्वान् पं० नेनूराम ब्रह्मभट्ट थे जो ऋषि दयानन्द की जीवन संध्या के समय जोधपुर में रहते थे।

वर्षों बाद प्रसिद्ध मासिक चांद ने १९२९ ई० में अपना चर्चित मारवाड़ी अंक निकाला तो उसमें प्रो० रमाकान्त त्रिपाठी (कानपुर) का उक्त पं० नेनूराम पर एक लेख छपा। यही प्रो० त्रिपाठी कालान्तर में जसवन्त कॉलेज जोधपुर में अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे। इन प्रंक्तियों के लेखक ने उनके अंग्रेजी साहित्य का बी०ए० में अध्ययन किया था। प्रो० त्रिपाठी को जो जानकारी ऋषि की जीवन संध्या के बारे में मिली, वह चांद के उक्त विशेषांक के पृष्ठ १५० पर इस प्रकार है। यह कहना आवश्यक है कि नेनूराम उन तीन व्यक्तियों में थे जो अजमेर से (स्वामी को जोधपुर के लिए लेगये) इनके साथ कवि अमरदास तथा सेठ दामोदरदास सांघी भी थे। इसके सिवा जितने दिन स्वामी जी जोधपुर रहे उतने दिन नेनूराम जी निरन्तर उनकी सेवा में रहे। स्वामी जी के बल पौरुष, उनकी निर्भीकता, उनकी वाग्मिता का सजीव चित्र भट्ट नेनूराम ने मुझे बताया। उनकी आंखों देखी बात है कि प्रात:काल उठकर तीन चार मील तक ऋषि दयानन्द तेज चाल से बाहर जंगल में निकल जाते। वहीं व्यायाम करके वापस आते और कम से कम दो तीन सेर दूध पीते। भोजन करते समय इसी परिमाण में हरे शाक खाते थे।

उनकी साधारण बोलचाल की ध्वनि ऐसी गम्भीर और उच्च होती कि दूर से सुनाई देती। जब कभी सभा में वक्तृता देते तो लोग मंत्रमुग्ध से हो जाते। उनकी शैली ऐसी चुभनेवाली होती थी कि जब चाहते श्रोताओं

thearyasamaj.org

की आंखों को आंसुओं से भर देते और कभी उन्हें हंसा देते। भट्ट जी का कहना था कि एकबार किसी व्याख्यान में स्वामी जी ने कुरान शरीफ से कुछ आयतें बोलीं तो उनका उच्चारण इतना शुद्ध था कि कई मुसलमान लोग श्रोता चिल्ला उठे-यह साक्षात् खुदा का अवतार है। उनके निवास काल में कई आतताई लोगों ने उनके साथ कुत्सित व्यवहार किया और उनकी जीवन लीला का अन्त इतना शीघ्र कराया कि उसके सम्बन्ध भी कुछ दोहराना अनुचित है। केवल इतना कहना काफी है कि इन दुष्टों में एक का नाम कलिया था जिसने एक दूसरे व्यक्ति से मिलकर प्रसिद्ध वेश्या नन्ही जान से स्वामी को दूध में विष पिड़ुला दिया।

नेनूराम जी उस समय का पूरा वृत्तान्त देते हैं। जब स्वामी जी को आभास होने लगा था कि उन्हें विष दिया गया है। वे स्वामी जी के साथ-साथ आबू होते हुए अजमेर गये थे जब तक कि विषपान से अस्वस्थ हुए वे जोधपुर से विदा हुए थे। उपसंहार में हम कह सकते हैं कि नेनूराम जी जिन्होंने इतनी ऐतिहासिक सामग्री इतने परिश्रम से एकत्र कर हमारे सामने प्रस्तुत की है, जिन्होंने स्वामी दयानन्द जैसे महापुरुष का सत्संग किया है वे स्वयं इतिहास बन गये हैं।

— चांद मारवाड़ी अंक १९२९ पृ० १५०-१५१

कुछ स्पष्टीकरण- यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि स्वामी जी को विष देनेवाले का वास्तविक नाम धूड़ जी मिश्र था और वह रसोइए के तौर पर स्वामी जी के साथ शाहपुरा से आया था। स्वामी जी को मरवाने के षड्यंत्र में नन्हीं के अतिरिक्त मियां फैजुला का हाथ भी बताया गया है। यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि महाराजा जसवन्तसिंह के पास नन्ही नाम की दो स्त्रियां रखैल के रूप में थीं। पहली मुसलमान थी- नन्हीं जान। किन्तु स्वामी जी को विष दिलाने में जिस नन्ही का हाथ था वह हिन्दू भगतन जाति की थी। सामान्यरूप से इस जाति में वेश्यावृत्ति का प्रचलन है किन्तु महाराजा की प्रेयसी नन्हीं को वेश्या न कहकर उपपत्नी, रखैल या पासवान (मारवाड़ी शब्द) कहना उचित है। वह वैष्णव माता को मानती थी और उसका बनाया विष्णु मन्दिर जोधपुर उदयमंदिर मोहल्ले में मुख्य मार्ग पर है। यह अब राजकीय सम्पत्ति है।

— ३१५ शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर

दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) में

सघन साधना शिविर

आध्यात्मिक ज्ञान-विज्ञान-पिपासु, समाधि, वैराग्य, तत्त्वज्ञान के अभिलाषी, आत्मकल्याण के इच्छुक, अध्ययन-स्वाध्याय-प्रेमी, भद्रशील महानुभावो!

आपके प्रिय दर्शनयोग महाविद्यालय, आर्यवन विकास फार्म ट्रस्ट, रोजड़ में योगाभ्यास के पथ पर आरोहण, प्रगति, सकल क्लेश के प्रक्षालन या अन्तःकरण की परिशुद्धि, ऐहिक सुख-शान्ति एवं आत्मा व परमात्मा की प्राप्ति हेतु वैदिक दर्शनों के आधार पर एक वर्ष के लिए **स्वामी ब्रह्मविदानन्द सरस्वती जी,** आचार्य, दर्शन योग महाविद्यालय की अध्यक्षता में **सघन साधना शिविर** के नाम तदनुसाद **१ अक्टूबर २०१४ से ३० सितम्बर २०१५** तक प्रवाहित होने जा रही है। इस शिविर के लिए विद्यालय के संस्थापक **पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज** का आशीर्वाद व शुभकामनाएँ भी प्राप्त हैं।

विशेष द्रष्टव्य — आंशिक या श्रोता के रूप में शिविर में भाग लेनेवाले व्यवस्थापक से सम्पर्क करें। वे अपनी व्यवस्था के अनुसार अनुमति दे सकेंगे। स्थान सीमित होने के कारण पूर्व सूचना व स्वीकृति के उपरान्त ही पधारें। मो. 09409415011, 09409415017 फो० 02770-287418।

भवदीय

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक
निदेशक-दर्शन योग महाविद्यालय

मनसुखभाई धनजीभाई वेलाणी
प्रमुख-आर्यवन विकास फार्म

ब्र० दिनेश कुमार
व्यवस्थापक - दर्शन योग महाविद्यालय

thearyasamaj.org

शिक्षा की समस्याएँ वैदिक समाधान —

ब्रह्मचारी सत्यनिष्ठा से मृत्युविजयी होते हैं

— अशोक आर्य कौशाम्बी

ब्रह्मचारी अपने तप के बलपर सत्यनिष्ठ होकर सत्यनिष्ठ तथा ज्ञानी व्यक्ति मृत्यु पर विजय पाने में सक्षम होते हैं। ब्रह्मचारी पर प्रकाश डालते हुए इस तथ्य को वेद कांड में इस प्रकार उपदेश किया गया है :—

ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत।
इन्द्रो ह ब्रह्मचर्येण देवेभ्यः स्वाराभरत्॥

अथर्ववेद ११.५.१९॥

मन्त्र उपदेश करते हुए बता रहा है कि ज्ञानी लोग, जिन्हें हम सत्यनिष्ठ लोग भी कह सकते हैं, ब्रह्मचर्य तथा तप के द्वारा मृत्यु पर विजय पाते हैं। इस वाक्य में ब्रह्मचर्य और तप, इन दो शब्दों पर विशेष बल दिया गया है। प्रथम शब्द ब्रह्मचर्य का प्रयोग किया गया है। इसलिए आओ हम सर्वप्रथम यह जानने का यत्न करें कि ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचर्य किसे कहते हैं :—

ब्रह्मचर्य अथवा ब्रह्मचारी

ब्रह्म का अर्थ है ज्ञान, परमपिता परमात्मा का दिया गया ज्ञान। हम जानते हैं कि जो ज्ञान परमात्मा ने प्राणी मात्र के कल्याण के लिए इस सृष्टि के आरम्भ में दिया था, वह ब्रह्मज्ञान था। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि यह ज्ञान सृष्टि के आदि में दिया गया था, इसलिए यह ज्ञान सृष्टि के सब ज्ञानों में सब से प्राचीन भी है तथा सृष्टि के सब ज्ञानों का स्रोत भी यह ज्ञान ही है। इस मानक के अनुसार जब हम प्राचीनतम ज्ञान की खोज करते हैं तो हम पाते हैं कि इस सृष्टि के प्राचीनतम ज्ञान का नाम वेद है। वेद से प्राचीन पुस्तक इस सृष्टि में अन्य कोई नहीं होने के कारण हम वेद को ही प्राचीनतम ज्ञान मानते हैं। इस सम्बन्ध में ईसाई मत का धर्म ग्रंथ बाईबल भी इस बात की पुष्टि करते हुए कहता है कि **''इस सृष्टि के आरम्भ में शब्द था। यह शब्द प्रभु का दिया हुआ था। यह शब्द प्रभु का आदेश था। यह शब्द सदा रहनेवाला होने के कारण कभी नष्ट नहीं होता।'' ...... जब हम बाईबल के इस सन्देश का विश्लेषण करते हैं तो हम पाते हैं कि 'यह भी वेद रूपी ज्ञान की ही चर्चा कर रहा है।''** बाई यह शब्द अर्थात् यह ज्ञान रूपी बल, यह परमपिता परमात्मा का दिया हुआ आदि ज्ञान ही वेद है। अत: ब्रह्म शब्द का अर्थ हुआ वेद।

ब्रह्म का अर्थ भलीभान्ति जान लेने के पश्चात् हम इस स्थिति में आगए हैं कि इस के दूसरे भाग चारी का भी कुछ विश्लेषण कर सकें। ब्रह्म के दूसरे भाग चारी या चर्य का अर्थ है विचरण करनेवाला अर्थात् जो ब्रह्म में अर्थात् ईश्वर के दिए हुए वेद ज्ञान में विचरण करे अथवा इस ज्ञान को पाने का, जानने का यत्न करे उसे ब्रह्मचारी कहते हैं।

भारत की प्राचीन परम्परा के अनुसार जिस बालक को पिता यज्ञोपवीत संस्कार करके बाईस प्रकार के उपदेश देकर वेदादि शास्त्रों की शिक्षा पाने के लिए घर से विदा कर गुरुकुल में गुरु चरणों में भेज देता था, उसे ब्रह्मचारी कहा जाता था तथा आज भी गुरुकुल में शिक्षा पाने वाले बालक को ब्रह्मचारी के नाम से ही जाना जाता है।

तप

ब्रह्मचारी के सम्बन्ध में जानलेने के पश्चात् आता है शब्द तप। इस शब्द को समझने के पश्चात् ही हम इस मन्त्र के अगले भाग को समझ पाने के योग्य बन सकेंगे। तपाने को ही तप के नाम से जाना जाता है। किसे तपाये कि उसे तप कहा जावे। स्पष्ट है ब्रह्मचर्य से सम्बन्ध रखनेवाले शब्द तप का भाव

thearyasamaj.org

है ब्रह्मचारी के लिए तप। तप से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि जो बालक गुरुकुल में प्रभु के दिए हुए ज्ञान को पाने गया है वह कठोर तपश्चर्या से ही इस ज्ञान को पा सकता है। जब तक वह अपने शरीर को योग, आसन, प्राणायाम आदि साधनों से तपाता नहीं, अनेक प्रकार के कष्ट सहन नहीं करता, तब तक वह इस शिक्षा को भली प्रकार पाने का सामर्थ्य नहीं रखता। इसलिए यह आवश्यक है कि ब्रह्मचर्य में रहते हुए उसे अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना होता है, अनेकविध पुरुषार्थ करना होता है, प्रातः ब्राह्ममुहूर्त में उठकर साधना करनी होती है। गुरु की सेवा करनी भी उसके लिए आवश्यक होती है। इस प्रकार के साधनापूर्ण जीवन में रहते हुए अंत में वह प्रभु का दिया हुआ ज्ञान जो वेद के रूप में है, उसे यह ब्रह्मचारी पा सकता है।

इस प्रकार ब्रह्मचर्य व तप से जो लोग सत्यनिष्ठ अर्थात् सत्य में अगाध निष्ठा रखने वाले तथा ज्ञान के भंडारी लोग होते हैं। इस प्रकार के लोग मृत्यु से कभी भय भयभीत नहीं होते। ये लोग मृत्यु को वरदान मानते हैं तथा मृत्यु का विजय पा लेते हैं। ऐसे लोगों को मृत्युविजयी कहते हैं। इस प्रकार जो जीवात्मा है, वह ब्रह्मचर्य में विचरण करते हुए सब प्रकार के इन्द्रियों के सुखों को प्राप्त कर सुखों से परिपूर्ण हो जाता है।

यह ब्रह्मचर्य ही है, जिससे प्राण, अपान, व्यानादि अर्थात् हमारे श्वास लेने, श्वास छोड़ने तथा श्वास बीच में ही रोक लेने की क्रिया के साथ ही साथ वाणी मन, हृदय, ज्ञान, मेधा आदि वाले बनते हैं, हमारा मन साफ व दूसरों का सहायक बनता है, हृदय में सदा उत्तम विचार ही आते हैं। हमारा ज्ञान भी ऐसा पवित्र होता है कि इसके प्रयोग से हममें विश्व के कल्याण की शक्ति आ जाती है। हमारी मेधा बुद्धि भी अच्छे बुरे में अंतर करने में सक्षम होकर जन कल्याण में लग जाती है। इस प्रकार ब्रह्मचर्य के कारण हमने जिस ज्ञान को प्राप्त किया है, उस ज्ञान का हम केवल अपने हित के लिए ही प्रयोग नहीं करते अपितु दूसरों के हित को भी अपना ही हित मानते हुए उन में भी बाँटते हैं।

इस सब से विश्व के जितने भी दिव्य गुण हैं, उन सबका ब्रह्मचारी के अंदर निवास हो जाता है। ब्रह्मचारी दिव्य गुणों का भंडारी और स्वामी हो जाता है। ये दिव्य गुण ही हैं, जिन्हें पाने के लिए ऋषि लोग वर्षों तक जंगलों की खाक छानते हैं तो भी वे उन्हें पाने में सफल नहीं होते। ये सब गुण ब्रह्मचारी को तप के परिणाम स्वरूप मिल जाते हैं। इस प्रकार वह ब्रह्मचारी प्रकाशमान परमेश्वर के ज्ञान वेद को अपने में धारण करने में सफल होता है।

आज की शिक्षा की सब से बड़ी समस्या यह है कि यह शिक्षा वेदाधारित नहीं है किन्तु तो भी आज का विद्यार्थी, जो ब्रह्मचारी के गुणों से संपन्न नहीं है, को भी अत्यधिक पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है शिक्षा को पाने के लिए, जिस के परिणाम स्वरूप वह कुछ सीमा तक सुशिक्षा पाने में सफल होता है किन्तु इस समस्या का समाधान यह ही है कि आज भी प्राचीन शिक्षा पद्धति को अपनाए बिना विश्व का कल्याण संभव नहीं। यदि कोई कहे कि विज्ञान आदि को जानने के लिए आधुनिक पद्धति की शिक्षा आवश्यक है, अंग्रेजी का ज्ञान आवश्यक है। यह भी उनका भ्रम मात्र ही है। जिस लक्ष्मण रेखा को सीता जी की रक्षा के लिए लगाया गया था, वैसा बारूद अथवा वैसा शस्त्र आज तक इस सभ्य जगत् का विज्ञान नहीं बना सका जो एक ओर से मार करे किन्तु दूसरी ओर के रहने वाले को सुरक्षित रखे। हमारे आज के सब शस्त्र सब ओर से समान मार करते हैं तथा ऐसा करते हुए यह शत्रु और मित्र में भेद नहीं करते किन्तु लक्ष्मण रेखा रूपी शस्त्र शत्रु और मित्र में अंतर को समझते थे। अतः इस समस्या का एकमात्र समाधान है प्राचीन शिक्षा पद्धति, जिसे अपना कर ही हम अपने खोये हुए वैभव को पा सकते हैं।

thearyasamaj.org

सांझी सोच का सुख

— डॉ सरिता वाशिष्ठ

सुबह का शान्त वातावरण, एकाएक महिलाओं की कर्कश आवाज और फिर उनमें दो चार आदमियों के आक्रामक तेवर.... । बात थी गली की सफाईवाली सड़क वाले पर आरोप लगा रही थी कि उसने सड़क की गन्दगी गली में सरका दी। सड़क वाली के तेवर थे कि गली बुहार कर कूड़ा साफ सड़क पर पटक दिया। 'जिसका काम है वह तो आता नहीं घरवाली को भेज देता है।' 'तूने मेरे घरवाले का नाम लिया।' कूड़े को ट्राली में डालने वाले भी आ धमके। सात बजे तक वाक्‌युद्ध और धक्का मुक्की चली। ट्रेफिक अपनी रफ्तार से चलता रहा। प्रातः साइकिल से जा रही तीन छात्राओं को स्कूटर से जा रहे मनचलों ने पहले अचानक हॉर्न दिया पीछे वाले ने धक्का दिया और तेजी से निकल गए। एक स्कूटर सर्किल से लौटकर आया, आवाज कसी और निकल गया। छात्रा के कपड़े गिरने से फट चुके थे। उन्होंने किसी तरह अपने को व्यवस्थित किया और एक तनाव लिए चेहरे के साथ आगे बढ़ गई। टैम्पो से सवारी पूरी तरह उतर भी नहीं पाई कि टैम्पों चल पड़ा, महिला सड़क पर गिर गई। दो चार लोग हंस दिए। सड़क पर थैला गिर गया, चप्पल टूट गई, कपड़ों के धूल लग गई।

एक रोटी के चार टुकड़े करके हाथ में लिए एक महिला 'तू' 'तू' करके कुत्तों को इकट्‌ठा कर चुकी थी। चार टुकड़े किस किस के हिस्से आते, वे आपस में झपटे और लड़ने गुर्राने लगे। एक धनी दानी सज्जन ने दो किलो हरी घास सड़क के बीच में डालकर गौओं को घास खिलाने का पुण्य फल प्राप्त किया। सड़क पर कई दिनों से एक विक्षिप्त प्रातः आवाजें लगाता, 'सब मरेंगे, सब मरेंगे' चिल्लाता घूम रहा है। एक पैंतालीस पचास के आसपास की उम्र वाली महिला अर्द्ध नग्नावस्था में कभी इस नुक्कड़ पर तो कभी उस नुक्कड़ पर खड़ी मिलती। किसी ने पुरानी धोती कमीज दी वह चली जाती और फिर दूसरे दिन दूसरी जगह। एक रिक्शा पास से निकला, जिस पर टेप लगा था, ''धार्मिक जनता से अपील की जाती है कि वे अधिक अधिक संख्या में पहुंचकर पुण्य के भागी बनें।'' सायरन और ब्रिगेड की गाड़ी आगे से निकल गई। कहीं आग लगी थी। दैनिक समाचार पत्र, 'मन्त्री का आकस्मिक निधन, शवयात्रा उनके निवास से निकलेगी।' एक शराबी गाली देता गिरता पड़ता, पता नहीं किसको चुनौती दे रहा था।

कितना घिनौना, अस्वाभाविक, असामाजिक प्रातः आरम्भ होता है मेरे देश में। कोई भी सांझी सोच में उठना ही नहीं जानता। संस्कारहीनता का यह स्वरूप तो इस भूमि ने कभी नहीं देखा होगा। माता-पिता कहते थे, 'उठते ही अपनी हथेली देखो, तीनों देवों का निवास इन्हीं हाथों में है।' समझ में आ गई श्रम के प्रति निष्ठा अपने श्रम और हाथों की कमाई। एक श्लोक याद करवाया जिसे उठते ही बोलना होता था, पूर्ण व्यापकत्व में समायी (विष्णु पत्नी) मां धारित्री, मैं क्षमा प्रार्थी हूं, सोकर उठा हूं, मेरे पैरों से तेरा स्पर्श, 'क्षमा करो' 'क्षमा करो' बड़ों को प्रणाम। प्रभु का स्मरण। चित्त और मन को शान्त रखना। एक पूरे आत्मविश्वास से दिन का शुभारम्भ हमारी सांझी सोच का प्रथम संस्कार रहा है। जिसमें पक्षियों को दाना, पशुओं का चारा और घरों की सफाई के साथ तन और मन को साफ करना। एक दीपक प्रज्ज्वलित कर उसे प्रणाम करना। ब्रह्म के सदृश दीपक के प्रकाश हमारा पथ प्रशस्त करो।

'दीपू बेटे, उठो चाय तैयार है।' 'रजी, सूरज सिर पर चढ़ गया उठो।' 'ओहो, सोने भी नहीं देते।' कितना महंगा सौदा है, यह देर तक सोने का जिसकी कीमत स्वास्थ्य के नाम पर रो-रोकर जिन्दगी भर चुकानी पड़ती है। हमारी शालीन तसल्ली है बड़े होकर अपने आप सम्भल जाएंगे।

प्रातःकालीन अभिवादन का लोप, किसी का

thearyasamaj.org

ध्यान आकृष्ट नहीं करता। प्रात: एक सज्जन सामने से आ रहे थे, नमस्कार किया, बोले, "मैंने आपको पहचाना नहीं, कहिए।" 'नमस्कार' को भी प्रतिदान नहीं मिलता।

बच्चों को एक बात समझायी जा रही है, कोई वस्तु दे तो, उसे थैंक्स बोलो और कोई कितना ही ज्ञान या संस्कार दे तो उसे 'बीर' कर दिया। एक सेमिनार में पहुंचे, सदस्य रजिस्ट्रेशन कराकर बैग ले, ब्रेक फास्ट में पहुंचे, कहीं स्थान नहीं। संगोष्ठी में उद्घाटन भाषण और फोटो, वीडियो, सायंकालीन सत्र में मात्र एक पत्रवाचक। साइट सीन पर गाड़ियां भर गई।

परिवार या घर, व्यवहार को सद्भावना के आधार पर नहीं, वस्तुओं के आधार पर नाम रहे हैं। क्या दिया? इससे तो श्री जी अच्छे थे जो बच्चों को सौ-सौ रुपये दे गए। चाहे श्री जी की नीयत कितनी ही खोटी क्यों न हो। हमारे साझे सोच को सर्वाधिक रुग्ण किया है टी.वी. के सीरियलों ने, इनमें परिवार नहीं होता, बच्चे नहीं होते, बड़े नहीं होते, कोई है तो युवक एवं युवती। बी.ए. में पढ़ रहे हैं और देह उनके ३५ वर्ष के पतझड़ का लेखा बता रही है। यह अपने फैसले पशुओं की भांति अपने आप करते हैं। विद्यार्थी हैं किताबें नहीं होंगी, उद्योगपति हैं, उद्योग नहीं होगा। इनके पास, पद, मद, तस्करी, दादागिरी सबकुछ होता है परन्तु 'हार' नहीं होती।

सांझी सोच का पहला पाठ घर से आरम्भ होता है इसके लिए आवश्यक है कम से कम भोजन तो सभी मिल बैठकर बड़े आराम से करें। जूते पहने भोजना करना अन्न का अपमान है। जो भी साग या दाल बनी है, उस पर सबकी सहमति है, वह (जो बना है) यही खाने की आज इच्छा थी, भगवान् ने पूरी कर दी। ऐसा अच्छा स्वादिष्ट भोजन? आनन्द आ गया। जहां आप अपनी पसन्द थोपने लगते हैं समझिए, घर से हम कट गए हैं। सच जाने कहां चला गया है आखिर-सांझी सुख सोच का सुख। वो चुल्हे के इर्द-गिर्द—बाबा की थाली में सब बच्चों का बैठकर खाना और मां का लाड़ से परोसना।

हम ऋषि दयानन्द की जय बोलने के सच्चे अधिकारी कब बन सकेंगे?

—**कन्हैयालाल आर्य,** कोषाध्यक्ष
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हम लोग बड़े भाग्यशाली हैं जिन्हें गुरु के रूप में महर्षि दयानन्द जैसा तपस्वी ऋषि मिला। वह एक ऐसा मार्गदर्शक था, जिसके सम्मुख सभी गुरु ऐसे विलुप्त होते चले गये जैसे सूर्य उदय होने पर चांद एव नक्षत्रों की ज्योति धूमिल हो जाती है। उन्होंने अपने अपार तप एवं तपस्या के बल पर वेद रूपी वाणी हमें प्रदान की, जिसे पूरा मानव जगत् पढ सकता है, पढा सकता है। "**स्त्रीशूद्रौ नाऽधीयाताम्**" स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं वाली वार्ता को परिवर्तित करते हुए यह सिद्ध कर दिखाया कि वेद का पढना, पढाना और सुनना सुनाना सब आर्यो का न केवल धर्म अपितु परम धर्म बताया। आर्यसमाज ने न जाने कितने ही अनुसूचित एवं जनजाति युवकों को वेद ज्ञान देकर पंडित बनने का गौरव प्रदान किया। आज जगह जगह वेदों मन्त्रों के गान से यज्ञाग्नि प्रज्वलित हो रही है। महर्षि दयानन्द के महान् आन्दोलन ने आज पौराणिक जगत् में एक खलबली मचा दी है। आज उन हरिजनों को मन्दिरों में जाने का अधिकार दिलाया, उन्हें यज्ञोपवीत पहनाने और वेद पढने का अधिकार दिया। महर्षि दयानन्द समाज के इस उपेक्षित वर्ग के मसीहा बनकर आये। संसार का एक भी सुधारक ऐसा नहीं जिसने समाज को ऊंचा उठाने के लिए विष के प्याले पिये हों, पत्थर खाये हों, अपमान के कड़वे घूंट पीये हों और फिर भी मानव जाति को अमृत पिलाया हो। फिर भी यदि आज मानव जाति उनके उपकार को नहीं मानती तो यह उसकी कृतघ्नता होगी।

महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में जो भी आया

thearyasamaj.org

वह कृतकृत्य हो गया। चाहे वह श्रद्धानन्द हो या लेखराम, गुरुदत्त हो या हंसराज, सभी सोने के रूप में दयानन्द के सम्पर्क में आते गये और कुन्दन बन कर निकलते गये। परन्तु आज हम उनके उत्तराधिकारी क्या उस ओर बढ रहे हैं? यदि नहीं तो क्यों? आर्यो! सोचो! विचारो! अपनी अन्तरात्मा में झाको। मैं भी झांकू, तुम भी झांको, हम सभी झांकें तभी तो हम ऋषि के ऋण से अनृण हो सकेंगे। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि हम दूसरों के दोषों को देखना चाहते हैं, परन्तु अपने नहीं। आइये, आज से हम यह निर्णय लें कि दूसरों के दोष देखने की बजाये अपने दोष देखने प्रारम्भ करेंगे।

आज धर्म घट रहा है। पाप और पाखण्ड बढ़ रहा है। आज कथा, प्रवचन, सत्संग मात्र धार्मिक मनोरंजन बनकर रह गये हैं। परन्तु कभी आपने सोचा कि इन सब आडम्बरों से क्या आप को शान्ति मिलने वाली है। हम भीड़ जुटाने में लगे हैं हर तथाकथित गुरु अपने नाम के बड़े बड़े बैनर, चित्र इत्यादि लगवाकर अपनी प्रसिद्धि करा रहा है। उसे धर्म, कर्म से कोई वास्ता नहीं। बड़े बड़े मंच सजाये जा रहे हैं। परन्तु सोचो! क्या इनका जरा भी स्थायी प्रभाव जनता पर पड़ रहा है। एक भीड़ जो विवकेशून्य एवं ज्ञानशून्य है उसे वह तथाकथित गुरु ताली बजवाकर, सिर हिलवा कर, कथा के बीच खड़े होकर ठुमके लगवाकर जो असभ्यता का परिचय देकर, धर्मप्रचार का नाम दिया जाता है क्या यही धर्म है? क्या इसे सत्संग कहोगे? जिस प्रकार फिल्मी नायक लोगों को विभिन्न मुद्रायें दिखाकर मूर्ख बनाता है उसी प्रकार आजकल ये तथाकथित धर्मगुरु लोगों को मूर्ख बना रहे हैं। परन्तु मैं इन्हें दोषी नहीं ठहराता। वे तो व्यापारी हैं, उन्हें तो व्यापार करना है। परन्तु महर्षि स्वामी दयानन्द के उत्तराधिकारी आर्यो! सोचो! क्या यह आडम्बर, पाखण्ड एवं ढोंग हमारी अकमर्ण्यता के कारण नहीं हो रहा है! जब से हम ने आर्यसमाज के प्रचार, प्रसार करने की बजाय फोटो खिंचवाना, नेताओं का स्वागत करना और कुछ भजन सन्ध्या करा देना ही आर्यसमाज के उत्सव का उद्देश्य बना लिया है, तभी से यह सब कुछ हो रहा है। वैदिक प्रचार एवं प्रसार लुप्त हो रहा है। तभी तो आज तथाकथित धर्मगुरु कूड़ा करकट बहुत मंहगे दामों पर बेच रहे हैं। और हम बढ़िया दुकानदार होते हुए और अच्छा माल रखते हुए भी अपने वेद रूपी माल को लोगों के गले नहीं उतार रहे हैं। आइये आज हम इस विषय पर सोचें।

आज दुखद पीडा यह है कि आज के आर्यसमाज वेदप्रचार के कार्य को प्रमुखता की बजाय विद्यालय, औषधालय, दुकारन और मैरिज ब्यूरो आदि चलाने में अधिक रुचि दिखा रहे हैं। यह कार्य तो कोई भी संस्था कर सकती है। परन्तु वेदप्रचार का कार्य केवल आर्यसमाज ही कर सकता है। अत: आर्यसमाजी बन्धुओ! यदि हम वास्तव में महर्षि दयानन्द के उपकारों को मानते हैं उनके ऋण से अनृण होना चाहते हैं तो इन दूसरे कर्मों को प्रमुखता देने की बजाय वेदप्रचार का प्रमुखता दें, तभी हम महर्षि स्वामी दयानन्द को ''वेदां वाला स्वामी'' कहने के अधिकारी हो सकेंगे। मैं ऐसा मानता हूं कि विश्व में एक आर्यसमाज ही ऐसी संस्था है जो उच्च स्वर से कहता है कि वेद की ज्योति चलती रहे। फिर यह कैसे जलेगी? इन विद्यालयों, औषधालयों, बारातघरों के चलाने से नहीं बल्कि वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं प्रसार से जलती रहेगी। अत: आर्यो उठो! जागो! और आज से एक प्रण ले लो कि आज हम विवादों झगड़ों, कुर्सियों के लोभ को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द की सर्वप्रथम कामना स्वप्न वेद के प्रचार और प्रसार में अपनी पूरी शक्ति जुटा देंगे। यदि हम ऐसा कर सके तो हम महर्षि दयानन्द की जय बोलने-बुलाने के सच्चे अधिकारी बन सकेंगे।

— सम्पर्क सूत्र
4/45, शिवाजी नगर, गुडगांव, हरियाणा
चलभाष-09911197073

thearyasamaj.org

मांसाहार के तर्क

जब हम किसी से कहते हैं कि मनुष्य स्वाभाव से शाकाहारी है और हमें भक्षण के लिए प्राणी-हिंसा नहीं करनी चाहिए; यह जघन्य पाप है। मांसाहारी मनुष्य पाप की परिभाषा ठीक-ठीक समझ सकेगा यह तो बाद की बात है उससे पहले वह साधारण स्तर भी यह नहीं विचार करता की हमें क्या खाना चाहिए या क्या नहीं रखना चाहिए? जब मांसाहार न करने की बात कहें तो उलटा कहने वाले पर ही प्रश्न दाग दिये जाते हैं और मांसाहार को शरीर का पोषक मानने व सिद्ध करने में कई युक्तियाँ भी दे डालते हैं। हम उन्हीं कुछ युक्तियों पर विचार करेंगे-

कतिपय मांसाहारी लोगों की युक्तियां

1. **मानव शरीर के लिए प्रोटीन की आवश्यकता होती है। मांस में प्रोटीन पर्याप्त मात्रा में होते हैं, अतः उनका सेवन उचित है।**

प्रोटीन का निर्माण केवल वनस्पति से होता है। पशु-पक्षी अपने अन्न व प्रोटीन का निर्माण स्वयं नहीं कर सकते। इसके लिए उन्हें वनस्पतियों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। मनुष्य में वनस्पतिजन्य प्रोटीन का पाचन सहजता से होता है, पशु-पक्षीजन्य प्रोटीन का नहीं। इससे तो अनेक रोग उत्पन्न होते हैं। मूल बात प्रोटीन ग्रहण करने की है तो हम सीधे मूलस्त्रोत वनस्पतियों से ही ग्रहण क्यों न करें? मानव शरीर की वृद्धि धीमी होने से हमें अल्पमात्रा में ही प्रोटीन की आवश्यकता होती है जो प्रतिदिन के भोजन में पर्याप्त मात्रा में होती है।

अमरीका के डॉ० चिटेण्ड्रेन ने अपने प्रयोग के द्वारा यह सिद्ध किया है कि बोयट के द्वारा निर्धारित 116 ग्राम प्रोटीन प्रति मनुष्य, प्रतिदिन की आवश्यकता नहीं है। उसके विपरीत उससे कम प्रोटीन पर अधिक बल देते हुए उसकी मात्रा 30 से 40 ग्राम तथा कठिन परिश्रम करनेवाले मनुष्यों के लिए 50 से 55 ग्राम प्रतिदिन निर्धारित की है।

2. **दूध भी तो रक्त से ही बनता है। अतः दूध का सेवन भी तो हिंसा ही है, फिर मांस भक्षण में ही क्या दोष है?** दूध का निर्माण अन्न के रस से होता है न कि रक्त से। चरकसंहिता 15.7 में कहा गया है कि निर्माण हुए अन्न के रस का कुछ अंश दूध के निर्माण में जाता है तो कुछ अंश रक्त, मांस, मेद, मज्जा, वीर्य/रज आदि धातु के निर्माण में संलग्न होता है। रस से रक्त बनने में 8-10 दिन लगते हैं, किन्तु दूध का निर्माण प्रतिदिन होता है। पशु की मम्मेरी गलैण्ड से अन्न से दूध का निर्माण होता है। दूध मांसाहार नहीं है। दूध दूसरे के पोषण हेतु और रक्त स्वयं के पोषण हेतु होता है। अतः दूध और रक्त भिन्न-भिन्न हैं।

3. **दूध बछड़े के लिए है, मनुष्य के लिए नहीं**

दूध देनवाले पशुओं का अच्छी मात्रा में अन्न का प्रबन्ध तथा क्रास ब्रीड आदि कारणों से पशु अधिक दूध देते हैं। यदि ऐसा न करें तो दूध का निर्माण घट जाता है। पशु को नित्य हरी घास उपलब्ध नहीं होती, अतः विकल्प के रूप में उन्हें भूसा, खली, बिनौला, अनाज आदि दिये जाते हैं जिससे दूध का निर्माण अधिक मात्रा में किया जाता है। इसलिए दूध निकालना आवश्यक है।

4. **बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए अनाज की मात्रा पर्याप्त नहीं होगी, अतः जीवनयापन हेतु मांसाहार अटल है।** जहाँ अन्न उपलब्ध नहीं, वहाँ पशुओं का मांस खाएं, परन्तु पशुओं का खाद्य क्या है? बिना वनस्पति के पशु जीयेंगे कैसे? समुद्र में भी जलचर वहाँ उपलब्ध वनस्पतियाँ खाकर ही जीते हैं, यथा शैवाल आदि। वनस्पति ही मुख्य खाद्यान्न है, फिर हम वनस्पतियों का उपयोग कर अपनी समस्या का समाधान क्यों न कर सकेंगे?

thearyasamaj.org

यदि शाकाहार न हो तो मांस आएगा कहाँ से?

मांसाहारी लोग मांस के साथ वनस्पतिजन्य अन्न का सेवन भी अधिक मात्रा में करते हैं। केवल मांस से मनुष्य की पूर्ति नहीं हो सकती। मांस के साथ मद्यपान भी किया जाता है जिससे भोजन की मात्रा अधिक बढ़ जाती है, अत: मांसाहार शाकाहार का पर्याय नहीं हो सकता।

शाकाहार के कारण पशुओं का उचित संरक्षण होगा। दूध, दही, छाछ व घी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होंगे। उनका गोबर कृषि के लिए खाद बनेगा। भूमि ऊपजाऊ शक्ति बढ़ती है। इसके विपरीत सिन्थेटिक खाद का अधिक प्रयोग भूमि की गुणवत्ता को घटाती है। इसका उत्तर एक ही है पशु-पक्षीजन्य खाद का अभाव और पशु-पक्षी के अभाव का कारण मांसाहार।

5. आजकल शाकाहारी अण्डे भी उपलब्ध हैं। उनसे चूजे निकलते नहीं। अत: उनका सेवन शाकाहारी ही है। उसमें हिंसा कहाँ है?

वैज्ञानिकों ने अण्डों पर अनुसंधान किया जिसमें पाया गया कि अण्डों के छिलकों में सूक्ष्म छिद्र हैं, जिनसे अण्डों में भी श्वास-प्रश्वास की क्रिया चलती है यदि उन्हें ऑक्सीजन न मिले तो श्वास-प्रश्वास की क्रिया बन्द हो जाती है और अण्डे सड़ जाते हैं। उनसे दुर्गन्धि आने लगती है। अण्डों का स्वरूप शाकाहारी नहीं, अपितु मांसाहारी ही है।

6. यदि मांसाहार पाप तथा हिंसा है तो वनस्पति का खाना भी तो हिंसा और पाप ही है, क्योंकि वनस्पतियाँ भी सजीव ही हैं।

पाप वह है जिससे धोखा, हानि होती है। प्रत्येक सजीव को जीवनयापन हेतु अन्न की आवश्यकता होती है। प्रकृति में अन्न-चक्र सुचारु रूप से चलता रहता है। प्रत्येक का अन्न सुनियोजित है। उसका सेवन ही उसे आवश्यक होता है। अत: केवल मांसाहारी प्राणियों को ही मांसाहार अनिवार्य है, जो उनके लिए पाप नहीं है। किन्तु शाकाहारी के लिए मांसाहार पाप है। पाप और पुण्य हत्या में नहीं, अपितु उसके उद्देश्य पर निर्भर करता है, अत: केवल मांसाहारियों का मांस भक्षण तथा शाकाहारियों का शाक भक्षण पाप नहीं।

7. मांसाहार पैष्टिक है। उससे बड़ी मात्रा में ऊर्जा मिलती है। इसलिए शाकाहार की अपेक्षा मांसाहार अच्छा है।

यह युक्ति भी विज्ञान की ओट में दी जाती है जो उचित नहीं है। कार्बोहाइड्रेटस ही शरीर में ऊर्जा के स्रोत हैं, जो मात्र वनस्पतियों से ही प्राप्त होते हैं, मांस से नहीं। श्रम के लिए ऊर्जा की आवश्यकता होती है जो अधिक मात्रा में घी, बादाम, मूगंफली आदि से प्राप्त होती है। इसके अतिरिक्त शेष आवश्यक तत्त्व कैल्शियम, विटामिन्स, फास्फोरस आदि भी शाकाहार से ही प्राप्त होते हैं। देखें पौष्टिक तत्त्व चार्ट।

8. समुद्र तट आदि पर अनाज की उपज बहुत कम होती है तथा मछली आदि जलचरों की उपलब्धता अधिक मात्रा में होती है, अत: ऐसे स्थान पर मांसाहार अनिवार्य हो जाता है।

समुद्र में वनस्पतियाँ हैं जिन पर निर्भर रह कर जलचर प्राणी जीवनयापन करते हैं। जनसंख्या वृद्धि के कारण यातायात की सुविधाएँ भी बढ़ गई हैं, अत: जहाँ अन्न की उपज कम है, वहाँ अन्य स्थानों पर सहजता से उपलब्ध हो सकता है। कभी-कभी हम अन्न का आयात भी करते हैं। अत: अन्न का आयात भी समस्या का एक समाधान है।

आश्चर्य तो इस बात का है कि मांसाहार के औचित्य की पुष्टि हेतु कतिपय बहाने ढूँढ़े जाते हैं। ऐसा बहाना ढूँढ़नेवाले वे व्यक्ति भी हैं जिनके घर धनधान्य से समृद्ध हैं। घर में दूध एवं दुग्धजन्य

thearyasamaj.org

पदार्थ की विपुलता भी है और वे मांसाहारी भी हैं। समुद्र तट से वे मछली, झींगे आदि लाते हैं। क्या यह उनकी मजबूरी है? परिस्थिति की विवशता है? ये तो मात्र बहाने हैं।

तथाकथित शाकाहारी अण्डों के दुष्परिणाम

1. अठारह वर्षों के अनुसंधान का निष्कर्ष यह है कि अण्डे में 30% डीडीटी (विष) होता है।

2. रक्तचाप (B.P) तथा हृदयरोग का कारण अण्डों का सेवन है, अण्डों में कोलेस्ट्रोल की मात्रा अधिक होती है, जिससे हृदय रोग, रक्तचाप, किडनी स्टोन (पत्थरी), पित्ताशय में स्टोन होते हैं। फल तथा सब्जियों में कोलेस्ट्रोल नहीं पाया जाता।

3. एक अण्डे में लभगभ चार ग्रेन कोलेस्ट्रोल होता है, अत: अण्डों के सेवन से रक्त में कोलेस्ट्रोल बढ़ाता है, जिससे पित्ताशय में पथरी बनने लगती है तथा अनेक रोग भी उत्पन्न होते हैं।

4. अण्डों में केल्शियम कम मात्रा में तथा कार्बोहाइड्रेट्स का अभाव होता है, जिस कारण बड़ी आँत में सड़न हो सकती है।

5. मनुष्यों की आँतों में सूक्ष्म कीटाणु होते हैं। अण्डे उन कीटाणुओं को विषैला बनाते हैं, जिनसे अनेकविध रोग उत्पन्न होते हैं। अधिक मात्रा में अण्डे पैदा करने की लालसा से उनमें नानाविध रोग उत्पन्न होते हैं।

6. अण्डों का द्रव (बल्क) रोगों का निर्माण करता है। एक प्रयोग में जानवरों को अण्डों का सेफद बल्क खिलाया गया। परिणामत: उन्हें पक्षाघात हुआ और उनकी त्वचा भी सड़ने लगी। अण्डों के सफेद बल्क में यव्हीडन नामत तत्त्व होता है जो Eczema (त्वचा रोग) का निर्माण करता है।

7. मांसाहार से शरीर में यूरिक अम्ल में बढ़ोतरी होती है, क्योंकि मांस में 19% तथा वनस्पति में ०.4% और दूध में यूरिक अम्ल का अभाव होता है।

— **महेन्द्रसिंह** 092559-12314

अप्रैल १९३५ में गुरुकुल झज्जर की स्थिति

— पं० चमूपति

झज्जर (रोहतक) गुरुकुल

पंडित विश्वम्भरनाथ झज्जर निवासी ने अफ्रीका से लौटकर अपनी वहाँ की सारी कमाई गुरुकुल कांगड़ी को दे दी और कई वर्षों तक यहाँ अवैतनिक कार्य करते हुए गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की ओर आकर्षित होगये। झज्जर में अपने मित्रों से गुरुकुल खोलने के विषय में पूर्ण परामर्श कर और उन से सहायता प्राप्त कर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरङ्ग सभा से झज्जर की गुरुकुल भूमि में शाखा गुरुकुल खोलने की स्वीकृति प्राप्त कर ली और गुरुकुल भवन निर्माण का कार्य आरम्भ कर दिया। यह गुरुकुल श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरङ्ग सभा तिथि ३ ज्येष्ठ १९७२ तदनुसार १६ मई १९१५ के प्रस्ताव संख्या १६ के अनुसार स्थापित हुआ था।

स्वर्गवासी ला० बद्रीनाथ रईस झज्जर ने पंडित विश्वम्भरनाथ जी को पर्याप्त सहायता दी जिस के लिए वह धन्यवादार्ह होचुके हैं। अन्यान्य झज्जर निवासियों ने तथा आस-पास के ग्रामों के रहने वालों ने भी पंडित जी को यथाशक्ति सहायता दी और गुरुकुल भवननिर्माण का कार्य चलता रहा। परन्तु 'श्रेयांसि बहुविघ्नानि', इस किंवदन्ती के अनुसार गुरुकुल के लिए असीम चिन्ता के कारण पंडित जी का मन विक्षिप्त होगया और वह पागल से होगये। फिर क्या था? सहायक छिन्न-भिन्न हो गये, बनी-बनाई भोजनशाला और यज्ञशाला टूट फूट गई, रुपये कई जगह पड़े रह गये। किसी को विश्वास न था कि झज्जर में फिर गुरुकुल बनेगा। परन्तु पंडित जी के तप और श्री स्वामी परमानन्द और पं० ब्रह्मानन्द के पुरुषार्थ से गुरुकुल की पुन: स्थापना होने लगी। ला० लक्ष्मणदास तथा अन्यान्य सज्जनों की सहायता से गुरुकुल के रुपये जो पंडित विश्वम्भरनाथ के एकत्रित किए हुए थे और जो इधर-उधर पड़े हुए थे, इकट्ठे किए जाने लगे और धीरे-धीरे उनका बड़ा हिस्सा इकट्ठा हो गया और गुरुकुलभवन

thearyasamaj.org

फिर से तैयार होने लगा। गुरुकुल कमेटी एक साधारण आकार से बढ़कर बृहत् रूप वाली बन गई। इस समय ब्रह्मचारियों के रहने के लिए चतुर्दिक् से घिरे हुए दो पक्के कमरे तथा गोशाला, भोजनशाला और कर्मचारियों के वास्ते चतुर्दिक् से घिरे हुए आठ मकान तैयार होगये हैं। गुरुकुल की अपनी भूमि लगभग एक सौ पैंतीस बीघे है जिन में गुरुकुल की ओर से खेती होती है। मीठे जल का एक पक्का कुआं भी बन गय है जिस की सहायता से वाटिका भी लग गई है।

शाखा गुरुकुल झज्जर के नौ हजार रुपये गुरुकुल काँगड़ी में जमा हैं। यह रुपया पहले लगभग छः हजार था, अब सूद सहित नौ हजार हो गया है।

गुरुकुल का प्रबन्ध महासभा झज्जर के हाथों में है जिस के लगभग ५० पचार सभासद हैं। इस सभा के वर्तमान पदाधिकारी निम्नलिखित सज्जन हैं :—

प्रधान — श्री चौ० चुन्नीलाल बी०ए०, एल०एल०बी० सिलानी निवासी।

उपप्रधान — श्री चौधरी रामगोलाल छारा निवासी

उपप्रधान — श्री चौधरी रूपचन्द्र मातनहेल निवासी

उपप्रधान — श्री चौधरी जयसिंह बादली निवासी

मंत्री — श्री चौधरी स्वरूपसिंह जहांगीरपुर निवासी

उपमन्त्री — श्री लाला शिवराम झज्जर निवासी

कोषाध्यक्ष —श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती।

इस गुरुकुल के कार्यों को सुरीत्या सम्पादन करने के लिए तथा यह जांचने के लिए कि शिक्षा विभाग में ठीक-ठीक क्या व्यय होता है, इस गुरुकुल में तीन विभागों की स्थापना की गई है। (१) शिक्षा विभाग (२) गोशाला कृषि (३) उपदेशक विभाग। इन तीनों विभागों के आयव्यय पृथक्-पृथक् रखे जाते हैं। गोशाला, कृषि विभाग तथा उपदेशक विभागों के व्ययों के पश्चात् साल के अन्त में जो बचत होती है वह शिक्षा विभाग को दी जाती है जो कि वास्तविक गुरुकुल है।

(क) शिक्षा विभाग — ब्रह्मचारियों की संख्या वर्ष के अन्त में २३ थी। प्रथम श्रेणी से षष्ठ श्रेणी तक ब्रह्मचारियों को गुरुकुल कांगड़ी की शिक्षा पद्धति के अनुसार पढ़ाया जाता है, और उससे आगे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के श्रीमद् दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर की पाठविधि के अनुसार सिद्धान्तभूषण की पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं। प्रत्येक ब्रह्मचारी से ५ रुपये मासिक तथा वर्षभर के पहनने के वस्त्र आदि लिए जाते हैं। परन्तु इस नियम का अपवाद भी होता है अर्थात् तीक्ष्ण बुद्धिवाले निर्धन ब्रह्मचारी सर्वथा निश्शुल्क भी लिए जाते हैं। इस विभाग के निम्नलिखित कर्मचारी हैं :—

अवै० मुख्याधिष्ठाता — श्री स्वामी परमानन्द सरस्वती

अवैतनिक आचार्य — श्री स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती

अवैतनिक सहायक मुख्याधिष्ठाता — श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती जी हैं जो गुरुकुल की वस्तुओं के रक्षक तथा गुरुकुल के हिसाब किताब के उत्तरदाता (जिम्मेवार) हैं।

मुख्याध्यापक-श्री पं० विद्यारत्न सिद्धान्तभूषण।

द्वितीयाध्यापक-श्री पंडित महावीर सिद्धान्तभूषण।

(ख) गोशाला कृषि विभाग। इस विभाग के अध्यक्ष श्री स्वामी आत्मानन्द सरस्वती हैं जिन के आधीन प्रायःतीन कृषक काम करते रहे हैं। खेत एक सौ अड़तीस बीघे और गाय, बैल, बछड़े की संख्या चौबीस है। दूध गोशाला से प्रायः बीस सेर प्रति दिन निकलता है। वाटिका से शाक पर्याप्त होता है जिस कारण बाहर से शाक मोल लेने की आवश्यकता नहीं होती।

(ग) उपदेशक विभाग। आस पास के ग्रामों के आर्यो के विशेष आग्रह के कारण इस विभाग क स्थापना की गई थी। आर्यों में प्रचार तथा उन के वैदिक संस्कारों का सम्पादन इस विभाग के उद्देश्य थे। इस वर्ष इस विभाग के उपदेशक श्री ब्रह्मचारी रामसिंह तथा भजनीक श्री चौधरी नरसिंह रहे। इन दोनों पुरुषों ने अच्छा काम किया।

२६,००० रु० गुरुकुल की स्थिर सम्पत्ति है। १७०० रु० का गुरुकुल का विविध सामान है।

ब्रह्मचारियों की संरक्षा के लिए गुरुकुल झज्झर में एक साधारण औषधालय भी स्थापित है, जिस से आस पास के ग्रामों के लोग भी लाभ उठांत हैं।

(आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास के परिशिष्ट-ख से साभार उद्धृत)

thearyasamaj.org

अग्रवाल और लक्ष्मी

—विरजानन्द दैवकरणि

अगरोहा (हिसार) अग्रवाल व्यापारियों का निकास स्थल है। अग्ररोहा का प्राचीन नाम अग्रोदक जनपद था। इसके निवासी जन आग्रेय कहलाते थे। महाभारत ग्रन्थ में भी आग्रेय लोगों का वर्णन मिलता है। अग्रवाल लोग महाराजा अग्रसेन को अपना पूर्वज मानते हैं। परन्तु महाराजा अग्रसेन विषयक पुरातात्त्विक प्रमाण अभी तक प्राप्त नहीं हो सके हैं। इसके लिये और अधिक अन्वेषण की आवश्यकता है।

अग्रवाल लोग पुराकाल में "अगर", चन्दन आदि सुगन्धित द्रव्यों का व्यापार किया करते थे, इसीलिये अगरवाल=अग्रवाल कहलाते हैं। ये अग्रवाल लोग अपनी स्वतन्त्र मुद्रायें भी चलाते थे। ये मुद्रायें वर्तमान हरयाणा के हिसार, भिवानी और लुहारू क्षेत्र में मिलती हैं। इन मुद्राओं पर "अगोदके अगाच जनपदस" लेख मिलता है। इसका अभिप्राय है अँग्रोदक नामक क्षेत्र में स्थित अगाच जनपद की मुद्रा। दूसरे प्रकार की मुद्राओं पर "अगोदके अगाच मित्रपदाभिष्ठायिनाम्" यह लेख लिखा है। इस का भाव है अग्रोदक क्षेत्र में अगाच=अग्रवाल लोग जो कि (यौधेयगण के साथ) मित्रभाव को प्राप्त हो चुके हैं, उन लोगों की मुद्रा।

अग्रोदक=अगरोहा क्षेत्र के चारों और यौधेय प्रदेश था। यौधेयों से इन व्यापारीक लोगों ने व्यापारादिक कार्यो के कारण मैत्री स्थापित करली थी और यौधेयों ने अग्रवालों को अपनी स्वतन्त्र मुद्रा चलाने की स्वीकृति प्रदान की हुई थी। ये मुद्रायें इसी का प्रमाण और प्रतीक हैं। अगरोहा से अगाच जनपद की एक मिट्टी की मोहर भी मिली थी।

अग्रवालों के आग्रेय गण की अनेक प्रकार की मुद्राओं पर बैल, हाथी, घोड़ा और सिंह के चित्र मिलते हैं। मुद्रा के दूसरे भाग में बाड़ (घेरे) में बना वृक्ष चित्रित रहता है। यह वृक्ष चन्दन का प्रतीक है। चन्दन समृद्धि और शान्ति का प्रतीक है। इसीलिये वणिक लोग स्वभावत: शान्त प्रकृति के तथा परिश्रम के कारण समृद्धिशाली होते हैं।

प्राचीन काल में अग्रवाल परिषद् ने एक ऐसी मुद्रा प्रचलित की थी, जिस पर घेरे में बने (चन्दन) वृक्ष के दोनों ओर दो हाथी पिछले पैरों पर खड़े होकर वृक्ष को जल से सिञ्चित करते हुये दिखाये गये हैं। एक अन्य मुद्रा पर कमल के पुष्प पर खड़ी हुई लक्ष्मी (देवी) को चित्रित किया हुआ है। इन दोनों मुद्राओं के सम्मिलित रूप "कमल पुष्प पर स्थित गजलक्ष्मी" को आज प्रत्येक वैश्य अपनी पूज्य और अभीष्ट मानता है।

मूर्तियों में लक्ष्मी को कुबेर की सहचरी के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। अगरोहा की एक अण्डाकार मृन्मूर्ति पर एक ओर धनपति कुबेर तथा दूसरी ओर कलशहस्ता लक्ष्मी बनी हुई मिली है। भारतीय रिजर्व बैंक के नई दिल्ली में स्थित भवन के मुख्य प्रवेश द्वार पर कुबेर और लक्ष्मी की विशाल प्रतिमायें स्थित हैं। कुबेर और लक्ष्मी ये दोनों धन के देवता माने जाते हैं, इसीलिये वैश्य लोग अभीष्ट देवता की भांति इनकी पूजा करते हैं। दीपावली की रात्रि को सभी वैश्य लोग अपने संचित धन की पूजा करते हैं और यह विश्वास रखते हैं कि इस पूजा से लक्ष्मी प्रसन्न होकर वर्ष भर तक हमारे घर को अपना स्थायी निवास बना लेगी। किन्तु यह अन्धविश्वास ही है। क्यों कि लक्ष्मी की प्राप्ति में पुरुषार्थ और पूर्वसंचित कर्म ही सहायक होते हैं, कोरा पूजा पाठ कुछ नहीं कर सकता। नीति ग्रन्थों में कहा है-परिश्रमेणैव हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि मनोरथै: । केवल मनोरथों से कोई सिद्ध नहीं होता अपितु कार्यसिद्धि के लिये कठोर परिश्रम करना होता है, तभी सफलता मिलती है, अन्यथा नहीं।

thearyasamaj.org

गुरु विरजानन्द दण्डी

लेo वेदव्रत शास्त्री

पंजाबप्रान्त के उपनगर कर्तारपुर के समीप गंगापुर ग्राम में शारदशाखीय भारद्वाजगोत्रीय सारस्वत ब्राह्मण नारायणदत्त के घर में विरजानन्द का जन्म सन् 1778 (संवत् 1835 विo) में हुआ। गंगापुर ग्राम को किसी समय बोई नदी की बाढ़ बहा लेगई अत: इस सम्बन्ध में विशेष ज्ञान प्राप्त नहीं होपाया। विरजानन्द के अतिरिक्त नारायणदत्त का एक पुत्र और था जो विरजानन्द से बड़ा था।

पांच वर्ष से भी कम आयु में शीतला जिसे माता वा चेचक कहते हैं, की बीमारी में विरजानन्द जी के दोनों नेत्रों की ज्योति समाप्त होगई। बालक के नेत्र चले जाने पर कितना कष्ट और असुविधा होती है इसका आभास अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर कोई भी कर सकता है। साथ ही बालक के माता पिता भी उसके भविष्य की चिन्ता से मर्माहत होजाते हैं।

भगवान् की कुछ ऐसी विचित्र लीला देखने में आती है कि किसी एक इन्द्रिय की विकलता से होनेवाली न्यूनता की पूर्ति किसी दूसरे इन्द्रिय में अधिक पटुता वा तीव्रता प्रदान करके कर देता है। ईश्वर ने विरजानन्द के नेत्रों के अभाव की पूर्ति उनकी मेधा बुद्धि की तीव्र विलक्षणता के द्वारा करदी। उसे ऐसी प्रचण्ड स्मृतिशक्ति दी कि एक बार सुनकर ही वे उसे स्मरण कर लेते थे। इस चमत्कारी धारणा शक्ति ने ही उन्हें व्याकरणसूर्य बना दिया।

विद्यारम्भ संस्कार के पश्चात् आठ वर्ष आयु में विरजानन्द का वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। व्याकरणज्ञानार्थ प्रचलित परम्परा अनुसार लघु कौमुदी आदि का भी ज्ञान करवाया गया। कुछ काल पश्चात् माता-पिता का देहान्त होगया और बड़े भाई और भाभी के दुर्व्यवहार से दुखी होकर विरजानन्द ने 12 वर्ष की आयु में गृहत्याग कर दिया। अन्धा बालक मार्ग के कष्टों को सहता हुआ, घूमता फिरता तीन वर्ष में हृषिकेश पहुंच गया। विरजानन्द ने गंगाजल में खड़े होकर प्रतिदिन गायत्री मन्त्र का जप किया। लगभग तीन वर्ष की तपस्या से सिद्धि प्राप्त करके वे हरद्वार कनखल आये। यहां पर स्वामी पूर्णानन्द जी से संन्यासदीक्षा ली और विद्या भी प्राप्त करते रहे।

कनखल से विरजानन्द जी बनारस पहुंच गये। उस समय उन्हें सिद्धान्तकौमुदी कण्ठस्थ थी। बुद्धि विलक्षण थी। उस समय काशी में पंo विद्याधर नामक विद्वान् थे, उनसे विरजानन्द जी पढ़ने लगे। साथ-साथ वे छात्रों को पढ़ाते भी थे। काशी में व्याकरण के साथ वेदान्त आदि दर्शन भी पढ़े।

काशी से विरजानन्द गया जारहे थे, मार्ग में कुछ डाकुओं ने उन्हें तंग किया तो वे चिल्लाने लगे। चीत्कार सुनकर ग्वालियरराज्य के सामन्त ने अपने डेरे से रक्षक पुरुष भेजे। कुछ काल तक सामन्त को उपदेश कर विरजानन्द जी गंगा-परिक्रमा पर चल पड़े। गया से विरजानन्द जी कलकत्ता और गंगासागर तक गये होंगे। कलकत्ता से लौटकर विरजानन्द जी एटा जिले के सोरों नगर में आगये। वहां से गढिया घाट गये। वहां पर भी छात्रों को पढ़ाते थे। वहां से अलवरनरेश के आग्रह पर दण्डी

thearyasamaj.org

जी अलवर पधारे। वहां पर नरेश को कुछ समय तक पढ़ाकर अपने शिष्य अंगदराम के साथ पुनः सोरों आगये। सोरों से मुरसान और भरतपुर के राजाओं के आग्रह पर मुरसान और भरतपुर गये।

अन्त में मथुरा में आकर दण्डी जी ने गतश्रम नारायण मन्दिर में पाठशाला खोली। दो मास पश्चात् वहां से पाठशाला उठाकर किराये के मकान में लगये और उनके जीवनकाल तक पाठशाला वहीं पर रही। पाठशाला का व्ययभार अलवर, भरतपुर और जयपुराधिपति बहन करते थे।

एक दाक्षिणात्य ब्राह्मण, जो दण्डी जी का पड़ोसी था, वह नित्य अष्टाध्यायी का पाठ करता था। उसका पाठ सुनकर दण्डी जी ने अष्टाध्यासी कण्ठस्थ करली।

दण्डी जी की पाठशाला में स्वामी दयानन्द का आगमन संवत् 1917 वि० सन् 1860 में हुआ। यह 1857 की क्रान्ति के पश्चात् दमन का काल था। यहां पर स्वामी दयानन्द ने अष्टाध्यायी महाभाष्य पढ़े। वेदार्थप्रक्रिया को समझा और वेदोपदेश और देशोद्धार के लिए चल पड़े।

व्याकरणाध्ययन की आर्षपरम्परा

1. गुरु विरजानन्द दण्डी जी के शिष्य- अंगदराम, बुद्धसेन, उदयप्रकाश, युगलकिशोर, गंगादत्त, रंगदत्त, नन्द जी, रमणलाल गोस्वामी, श्यामलाल पण्डा, वनमाली, दयानन्द सरस्वती, नवनीत कविवर, ग्वाल कवि।

दण्डी जी का देहावसान 14 सितम्बर 1868 ई० में हुआ।

दण्डी जी के शिष्य युगलकिशोर, युगलकिशोर के शिष्य पं० ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, उनके शिष्य पं० युधिष्ठिर मीमांसक, उनके शिष्य पं० विजयपाल विद्यावारिधि आदि।

2. दण्डी जी के शिष्य उदयप्रकाश, उदयप्रकाश के शिष्य पं० गंगादत्त (स्वामी शुद्धबोध तीर्थ), स्वामी शुद्धबोध के शिष्य पं० भीमसेन (कोटा), पं० राजेन्द्रनाथ शास्त्री (नांगलोई)।

3. पं० राजेन्द्रनाथ शास्त्री के शिष्य पण्डित सुरेन्द्रकुमार (अलीगढ़), विश्वप्रिय शास्त्री लेदरपुर (बिजनौर), पं० बुद्धदेव शास्त्री लेदरपुर (बिजनौर), पं० श्रुतिकान्त (मद्रास), पं० भद्रसेन (मद्रास), ब्र० भगवान्देव (नरेला), पं० विश्वदेव शास्त्री कैलाशनगर दिल्ली, डॉ० वेदव्रत आलोक (पुत्र)।

4. आचार्य भगवान्देव और पं० विश्वप्रिय शास्त्री के शिष्य १. यज्ञदेव शास्त्री लूलोढ, रेवाड़ी हरयाणा, २. वेदव्रत शास्त्री अजीतपुरा, त. चिड़ावा, जिला झुझुनूं (राज.), वर्तमान में आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक, ३. सुदर्शनदेव आचार्य बालन्द रोहतक, ४. सत्यव्रत शास्त्री, सुलतान बाजार हैदराबाद, ५.राजवीर शास्त्री फजलगढ़ (मेरठ) वर्तमान मोदीनगर (उ.प्र.)। ६. सत्यवीर शास्त्री डालावास (भिवानी), ७. महावीर मीमांसक छतेरा माजरा, सोनीपत, वर्तमान में पश्चिमपुरी दिल्ली। ८. वैद्य मनुदेव शास्त्री डालावास, वर्तमान चरखीदादरी भिवानी, ९. डॉ० सोमवीर चमराड़ा पानीपत, १०. स्वामी सत्यपति आर्यवन रोजड़ साबरकांठा गुजरात, १२.धर्मव्रत शास्त्री चुड़ेला झुंझनू, राज०, १३. वेदपाल शास्त्री झोझूकलां भिवानी, १४. धर्मपाल शास्त्री बोरी उस्मानाबाद (महाराष्ट्र)।

thearyasamaj.org

मारवाड़ का भीषण पाप

आर्यसमाज के इतिहास से परिचित महानुभाव 'नन्हीं भगतन'* के नाम से अपरिचित नहीं होंगे। महर्षि दयानन्द के चरित्र-सम्बन्धी अब तक की खोज करनेवाले प्रत्येक चरित्र-लेखक का यही विचार है कि इसी इन्हीं भगतन के षड्यन्त्र से महर्षि का परलोकवास हुआ। इसलिए देश-बन्धुओं को नन्हीं भगतन का परिचय कराना अनुचित न होगा।

* नन्हीं भगतन उर्फ नन्हीं जी के नियुक्त होने के पूर्व महाराजा जसवन्तसिंह तख्तसिंहोत के पास जयपुर-राज्य के खेतड़ी ठिकाने की मुसलमान-वेश्या नन्हीं जान नाम की नौकर थी। महर्षि का बलिदान नन्हीं भगतन से सम्बन्ध रखता है, न कि मुसलमान नन्हीं जान से। बहुत से लेखक नन्हीं और 'नन्हीं जान' को एक ही समझते हैं, जो भूल है। इसी भूल को ठीक करने के लिए ही यह खुलासा किया गया है।

''भगतन'' राजपूताने में एक जाति का ना है। इसकी उत्पत्ति रामावत साधुओं से कही जाती है। मारवाड़ राज्य में भगतन जाति के प्राय: सौ डेढ़ सौ परिवार आबाद हैं। प्रसिद्ध है कि जोधपुर-नरेश महाराजाधिराज राजराजेश्वर महाराजा श्रीविजयसिंह जी साहब के राज्य संवत् १८२२ वि० में कई गृहस्थ रामावत साधुओं की कन्याओं ने गाना-बजाना सीखकर वेश्या का धन्धा शुरू किया था। इन्हीं से इस भगतन-जाति की सृष्टि हुई। इस जाति का विश्वास वैष्णव-सम्प्रदाय है और इष्ट हनुमान जी का है। कन्याओं की सगाई नहीं होती। विवाह करने का नियम यह है कि गृहस्थ साधुओं के रीत्यनुसार विवाह-कार्य प्रारम्भ करके किसी गरीब गृहस्थ साधु के साथ, जो नौकरी या माँग करके खाते हैं, फेरे डाल देते हैं। उस साधु को पहले ही से रपया आठ आना देकर इस बात पर राजी कर लेते हैं कि वह लड़की के लिए दावा न करे।

इस प्रथा को यहाँ 'कुँवारपना उतारना' कहते हैं। साधु ''हथलेवे'' का पाप लेकर अपने घर चला जाता है। यदि कभी कोई साधु 'कुँवारपना उतारने' के लिए नहीं मिलता तो गणेश जी के चित्र के साथ ही फेरे डालकर कुँवारपना उतार देते हैं। इसी प्रकार के पातुरें, दूसरी जाति की हिन्दू-रण्डियाँ भी कुँवारपना उतारती हैं। पश्चात् पातुरों की तरह भगतनों में भी व्यभिचार (कसब) कराना शुरू किया जाता है। बिना कुँवारपना उतारे कोई ''भगतन'' या ''पातुर'' व्यभिचार नहीं कराती। यदि घर वाले कुँवारी छोकरी से व्यभिचार करावें तो वह जाति से बाहर कर दिए जाते हैं। विवाहिता स्त्रियाँ कसब नहीं करातीं, जिससे यह कहावत भी चल पड़ी है कि — ''जाई कसब कमावे और आई नहीं कमावे।'' वह अपने घरों में रहती हैं और गृहस्थी का काम-काज करती हैं। विधवा-विवाह यानी नाता (करेवा) इनमें नहीं होता। विवाह करते समय यह लोग अपना और अपनी माता का गोत्र छोड़ देते हैं।

भगतनों की गणना भारत के अन्य प्रान्तों की तवायफों में है। क्योंकि भगतनें नाचने, गाने, बजाने और बनाव-शृंगार से रहने में और सब भेदों में पातुरों से अधिक होशियार और शऊरदार (सभ्य) होती हैं।

रईस लोगों में इनका आदर विशेष रहता है। ये इज्जतदार वेश्याएँ समझी जाती हैं। विशेषकर रईसों का ही इनके यहां आवागमन रहता है। जिस प्रकार पातुरों के पिता-भाई 'जागरी' कहलाते हैं और उनके

thearyasamaj.org

विवाह-सम्बन्ध दरोगा (गोला-विदुर) जाति में होते हैं, उसी प्रकार भगतनों के पिता-भाई 'भगत' कहलाते हैं और गृहस्थ रामावत व निम्बार्क साधु-जाति में विवाह करते हैं। यह भगत लोग उनके साथ तबला-सारङ्गी बजाया करते हैं। भगतनों का व्यवसाय व्यभिचार कराना ही है! ये मुसलमानों के साथ संसर्ग नहीं करतीं। भगतनें मांस, मदिरा, शलगम, गाजर, काँदा (प्याज) और लहसन से भी परहेज करती हैं।

मारवाड़ की सुप्रसिद्ध 'नन्हीं भगतन' भी इसी भगतन-जाति की थी। उसकी माँ का नाम था 'छोटी भगतन'। कहा जाता है कि नन्हीं जब २०-२१ वर्ष की थी, तब उसके एक छोकरी पैदा हुई थी, किन्तु कुछ समय के पश्चात् वह मर गई। वह उन दिनों नव्वाब जूनागढ़ (काठियावाड़) के किसी शाहजादे के पास थी। कुछ समय पश्चात् यह जूनागढ़ से वापस जोधपुर लौटी। तब इसकी अवस्था २२-२३ वर्ष की थी। उस समय महाराजा सर जसवन्तसिंह जी (दूसरे) जी०सी०एस०आई० जोधपुर नरेश ने इसे अपने पास नौकर रख लिया और अपनी मृत्यु-पर्यन्त साथ ही रक्खा। वह उसे अलग नहीं छोड़ते थे। किले में जब जाते तब भी वह साथ ही रहा करती थी। वह पर्दा नहीं करती थी, तब भी महाराज साहब ने उसके पैर में सोना दे रक्खा था। कहा जाता है कि नन्हीं दिन में ६-७ बार अपनी रेशमी पोशाक बदला करती थी। हर समय वह अपने शरीर पर हीरे-माणिक के गहने पहने रहा करती थी।

नन्हीं भगतन के मरजीदान प्राय: मुसलमान थे। महाराजा ने इन्हें सेनापति आदि के बड़े-बड़े अधिकार रक्खे थे। ये लोग महाराजा साहब की और नन्हीं की प्रत्येक बात में हाँ में हाँ मिलाया करते थे!!

नन्हीं भगतन की मृत्यु सम्वत् १९६६ विक्रमी प्रथम श्रावण सुदी ७ (२४ जुलाई, सन् १९०९ ई०) को जोधपुर में हुई थी। उस समय उसकी आयु ६०-६१ वर्ष की थी। मृत्यु से ४-५ वर्ष पहले से ही वह भयङ्कर रोगों से पीड़ित थी। मारवाड़ में नन्हीं भगतन को 'नन्हीं जी' कहते हैं। महाराजा साहब और अन्य राजपुरुष भी उसे इसी प्यार के नाम से सम्बोधन किया करते थे। नन्हीं भगतन के जो मरजीदान थे, उनकी भी मृत्यु के समय ऐसी दशा हुई कि वैसी ईश्वर किसी की न करे। महाराजा साहब के परलोकवास के पश्चात् मुसाहिब आला महाराज सर प्रतापसिंह जी ने उन सबको अधिकारों से च्युत कर दिया। सब भयंकर रोगों से पीड़ित रहकर, मृत्यु को प्राप्त हुए। मारवाड़-निवासियों ने इन व्यक्तियों की शिक्षाजनक मृत्यु से अपने धार्मिक विश्वासों को बहुत कुछ दृढ़ कर लिया।

उन मुसलमानों की मृत्यु के पश्चात् उनका पाप से कमाया हुआ सब धन, जागीर, मकान आदि स्टेट द्वारा जब्त कर लिए गए। स्टेट से उनके घर वालों को नियमित वेतन मिलना प्रारम्भ हो गया, जो अब तक बराबर मिलता है। लाखों रुपये के घोड़े-बग्घी, महल आदि सब जब्त कर लिए गए। कहा भी है :—

रहै न कौड़ी पाप की, ज्यों आवे त्यों जाय।
लाखों का धन पाय के, मरे न कफ्फन पाय!!

महाराजा साहब की मृत्यु के पश्चात् नन्हीं भगतन खुद की हवेली में रहने लगी थी। वह अपनी मृत्यु, यानी जुलाई सन् १९०९ ई०, तक इसी बड़ी हवेली में रही। यह विशाल हवेली रेलवे स्टेशन के रास्ते पर जोधपुर के रण्डी-मुहल्ले (चकले) में है। नन्हीं का कोई सगा भाई आदि सम्बन्धी न था।* मामा के

thearyasamaj.org

भाई आदि थे, जिनसे इसकी सदा अनबन रहती थी। यह बड़ी मक्खीचूस रण्डी थी। एक पैसा भी अपने पास से दान-पुण्य में नहीं देती थी। इसके सारे बाल सफेद हो गए थे। यह चार-पाँच वर्ष तक भयंकर बवासीर के रोग से दु:खित रही। कहा है कि नन्हीं किसी राजपूत जीवन जी चावड़ा के वीर्य से उत्पन्न हुई थी; जोकि एक छोटा जागीरदार था। नन्हीं की माँ उसकी रखेली थी। नन्हीं की मृत्यु के पश्चात् उसकी जायदाद राज्य में जब्त की गई तो लगभग ६०० जोड़े तो रेशमी जूतों के ही मिले थे। ८०० के करीब रेशमी घाघरे थे और भी बहुत मूल्यवान् सामान था!! चीफ कोर्ट में कई महीनों तक सब चीजें नीलाम होती रहीं। लगभग १५-२० लाख रुपये की सब जायदाद नीलाम हुई थी।

कहा जाता है कि जिन दिनों महर्षि दयानन्द जी जोधपुर में धर्मोपदेश कर रहे थे, तो एक दिन अनायास ही नियत समय में कुछ पूर्व आप महलों (राई का बाग) में महाराजा साहब से भेंट के लिए आगए। नन्हीं भगतन उस समय महाराजा साहब के पास बैठी थी। महर्षि के आने का समाचार महल के फर्राश से सुनते ही महाराजा ने जल्दी-जल्दी नन्हीं को पालकी में बिठलाकर बाहर ले जाने की आज्ञा दी। शीघ्रता से उठाने के कारण पालकी एक ओर से कुछ झुक गई तो स्वयं महाराजा ने अपना कन्धा लगा दिया। महर्षि हाल तो सब सुन ही चुके थे, किन्तु आज यह सब कौतुक स्वयं अपनी आंखों से देकर क्रोध को न रोक सके और बड़ी निर्भीकता के साथ सिंहनाद करके बोले :—

"सिंहों के सिंहासन पर कुतियों का राज!!! इन कुतियों से कुत्ते ही पैदा होंगे???" महर्षि की गर्जना सारे महल में गूँज गई। पुराने शुभचिन्तकों का माथा ठनका। महाराजा तो सुनकर चुप हो गए, किन्तु नन्हीं भगतन ने इन शब्दों को सुनकर अपनी बड़ी बेइज्जती समझी। भैया फैजुल्ला खाँ का जमाना था, जिसको स्वयं महाराजा साहब भैया याने भाई सम्बोधन किया करते थे। वे यद्यपि साबिक दीवान थे, पर महाराजा के बड़े मुँह लगे थे। पहले तो दोनों ने मिलकर महाराजा साहब को ही भड़काने का प्रयत्न किया, किन्तु महर्षि के अतुल यश और मान के भय से जब महाराजा को कुछ कर सकने में असमर्थ देखा, तो स्वयं ही षड्यन्त्र रचने लगे। नन्हीं ने अपने एक विशेष कृपा-पात्र व्यक्ति को लालच देकर उसके द्वारा महर्षि के रसोइए को बहकाया और दूध में काँच पीसकर स्वामी जी को दिला दिया। वह दूध पीने के कुछ देर बाद ही महर्षि के पेट में भयानक दर्द आरम्भ हुआ और वह इतना अधिक बढ़ा कि डेढ़ मास तक महर्षि असाधारण रोग से पीड़ित रहे और अन्त में प्राण त्याग दिए। वह रसोइया कलिया (कल्ला जी*) अभी ७-८ वर्ष ही हुए, मरा है। उसने अपने कौतुक का इकबाल अन्तिम समय कर लिया था।

इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने मारवाड़-प्रान्त में ही, और वहाँ के एक बड़े राज्य और राजा व प्रजा के सुधार के निमित्त अपना बलिदान किया। मारवाड़ी ग्रहण की? क्या आपने कभी उस सच्चे संन्यासी के उपकार का स्मरण किया है? महर्षि का व्रत था कि मारवाड़-प्रान्त और राजस्थान के सब कुकर्म दूर हो जाएँ, वहाँ वैदिक धर्म का डङ्का बजकर सब में सदाचार का प्रचार हो, हिन्दू-सङ्गठन, गोरक्षा, शुद्धि और अछूतोद्धार के द्वारा सब जाति में एकता और धर्म-प्रेम जाग्रत हो।

– प्रस्तुतकर्त्ता- **भवानीलाल भारतीय**

चांद पत्रिका नवम्बर १९२९ से साभार

thearyasamaj.org

समाचार प्रभाग

आचार्य राजवीर शास्त्री का देहान्त

आचार्य राजवीर शास्त्री पर्याप्त समय से बीमार थे। अपने वर्तमान निवास भूपेन्द्रपुरी मोदीनगर (गाज़ियाबाद) में २४ सितम्बर २०१४ की रात्री में (२५ सितम्बर प्रात:काल ३ बजे) अन्तिम श्वास लिया। आपके पिता श्री शिवचरणदास जी ग्राम फजलगढ़, पो० फरीदनगर, जिला मेरठ (उ०प्र०) के निवासी थे

२५ सितम्बर २०१४ को अपराह्न २ बजे आपकी अन्त्येष्टि वैदिकविधि से मोदीनगर श्मशामभूमि पर की गई। स्वामी प्रणवानन्द, वेदव्रत शास्त्री, विक्रमसिंह शास्त्री, आचार्य धनंजय, डॉ० रघुवीर वेदालंकार, प्रिंसिपल (रि०) आचार्य यज्ञवीर, चन्द्रपाल राणा, रणवीरसिंह शास्त्री, गुरुकुल पौंधा के ब्रह्मचारी, स्थानीय आर्यजन आदि संस्कार में सम्मिलित हुए।

शास्त्री जी की धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पलता भी दीर्घकाल से रुग्ण है। ज्येष्ठ पुत्र विनयकुमार दिल्ली में अध्यापक (पीजीटी) है। मध्यमपुत्र संजयकुमार मोदीनगर में वस्त्रव्यापारी है। कनिष्ठपुत्र अजयकुमार उड़ी कश्मीर में सी०ए० है। पुत्री अंजना मोदीनगर में ही विवाहित है। पुत्र, पौत्रों का भरा पूरा परिवार है।

श्री राजवीर जी सन् १९४८ में गुरुकुल झज्जर में प्रविष्ट हुए थे और १९५३ में स्नातक बने। बाहर जाकर आपने पंजाब विश्वविद्यालय से शास्त्री, वाराणसेय विश्वविद्यालय से आचार्य और मेरठ विश्वविद्यालय से एम०ए० परीक्षा उत्तीर्ण की थी। ध्यान रहे कि उस काल में गुरुकुल झज्जर की परीक्षाओं को सरकारी मान्यता प्राप्त नहीं थी अत: स्नातक बनने के पश्चात् अन्य विश्वविद्यालयों की परीक्षायें उत्तीर्ण करनी होती थीं। १९५७ से १९६० तक राजवीर जी ने गुरुकुल झज्जर में अध्यापनकार्य भी किया था। शास्त्री जी गुरुकुल झज्जर के प्रारम्भिक सुयोग्य स्नातकों में से एक थे। आप आर्षसाहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली के प्रधान और दयानन्दसन्देश मासिकपत्र के आदरी सम्पादक थे। आप ने वैदिक कोष का निर्माण किया और योगदर्शन व्यासभाष्य का हिन्दी अनुवाद भी किया जो आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट से प्रकाशित हुए थे। आपने दिल्ली के सरकारी स्कूलों में अध्यापक रहते हुए और सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी गुरुकुल वेदविद्यालय गौतमनगर दिल्ली, आर्ष गुरुकुल पौंधा देहरादून और आर्ष कन्या गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में नि:शुल्क अध्यापन कार्य किया। ऐसे विद्वान् साथी के देहावसान का सभी को दु:ख है। ईश्वर उनकी आत्मा को सद्गति और परिवार, मित्र सम्बन्धियों को वियोगज दु:ख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। — **वेदव्रत शास्त्री**

यज्ञ प्रेमी माँ नहीं नहीं

अत्यन्त दु:ख के साथ सूचित कर रहे हैं कि श्रीसत्यानन्द मुंजाल की पुत्रवधू श्रीमती हर्ष मुंजाल जी का निधन दिनांक 03.09.2014 को नई दिल्ली में हो गया। आप पिछले कुछ वर्षों से रूग्ण अवस्था में थी लेकिन परमपिता परमात्मा की आज्ञानुसार आपने इस देह को त्यागा।

दिनांक 06.09.2014 को हुई प्रार्थना सभा में डॉ० महेश विद्यालंकार एवं आचार्य अखिलेश्वर जी के प्रेरक प्रवचन हुए। उपस्थित जनसमूह में आर्यजगत् के संन्यासीवृन्द एवं प्रमुख अधिकारी उपस्थित थे। साथ ही उद्योग जगत् से भी भारी संख्या में प्रतिनिधि उपस्थित थे। दिवंगत यज्ञप्रेमी माँ के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्राप्त हो और उनके शोकाकुल परिवार को यह अपार दु:ख सहन करने की शक्ति मिलें।

— **अजय सहगल**, सम्पादक (टंकारा समाचार)

thearyasamaj.org

हमारी विशिष्ट औषधियाँ

संजीवनी तैल

यह तैल घाव के भरने में जादू का काम करता है। भयंकर फोड़े-फुन्सी, गले-सड़े पुराने जख्मों तथा आग से जले हुए घावों की अचूक दवा है। कोई दर्द या जलन किये बिना थोड़े समय में सभी प्रकार के घावों को भरकर ठीक कर देता है। खून का बहना तो लगाते ही बन्द हो जाता है। चोट की भयंकर पीड़ा को तुरन्त शान्त कर देता है। दिनों का काम घण्टों में और घण्टों का काम मिनटों में पूरा कर देता है।

मूल्य : ५०-०० रुपये

च्यवनप्राश

शास्त्रोक्त विधि से तैयार किया हुआ स्वादिष्ट सुमधुर और दिव्य रसायन (टॉनिक) है। इसका सेवन प्रत्येक ऋतु में स्त्री, पुरुष, बालक व बूढ़े सबके लिए अत्यन्त लाभदायक है। पुरानी खांसी, जुकाम, नजला, गले का बैठना, दमा, तपेदिक तथा सभी हृदयरोगों की उत्तम औषध है। स्वप्नदोष, प्रमेह, धातुक्षीणता तथा सब प्रकार की निर्बलता और बुढ़ापे को इसका निरन्तर सेवन समूल नष्ट करता है। निर्बल को बलवान् और बूढ़े को जवान बनाने की अद्वितीय औषध है। च्यवन ऋषि इसी रसायन के सेवन से जवान होगये थे।

मूल्य : १ किलो २०० रुपये

नेत्रज्योति सुर्मा

सुर्मे तो बाजार में पर्याप्त मात्रा में मिल जाते हैं परन्तु इतना लाभप्रद और सस्ता सुर्मा मिलना कठिन है। इसके लगाने से आंखों के सब रोग जैसे आंखों से पानी बहना, खुजली, लाली, जाला, फोला, नजर की कमजोरी आदि विकार दूर होते हैं तथा बुढ़ापे तक आंखों की रक्षा करता है। दुखती आंखों में भी इसका प्रयोग अत्यन्त लाभप्रद है।

मूल्य : २५-०० रुपये

बलदामृत

हृदय और उदर के रोगों में रामबाण है, इसके निरन्तर प्रयोग से फेफड़ों की निर्बलता दूर होकर पुनः बल आजाता है। पीनस (सदा रहनेवाला जुकाम और नजले) की औषधि है। वीर्यवर्धक, कासनाशक, राजयक्ष्मा, श्वास (दमा) के लिए लाभकारी है। रोग के कारण आई निर्बलता को दूर करता है तथा अत्यन्त रक्तवर्धक है।

मूल्य : १३०-०० रुपये

आर्य आयुर्वेदिक रसायनशाला, गुरुकुल झज्जर

thearyasamaj.org

हमारे प्रमुख प्रकाशन

१.	व्याकरणमहाभाष्यम् (५ जिल्द) (प्रदीप उद्योत, विमर्शसहित)	१०५०-००
२.	अष्टाध्यायी (पाणिनि)	१५-००
३.	कारिकाप्रकाश (सुदर्शनदेव)	२०-००
४.	लिङ्गानुशासनवृत्ति (सुदर्शनदेव)	१५-००
५.	फिट्सूत्रप्रदीप (सुदर्शनदेव)	१०-००
६.	छन्दःशास्त्रम् (व्रतिमंगलावृत्ति)	४५-००
७.	काव्यालकारसूत्राणि (व्रतिमंगलावृत्ति)	२५-००
८.	निरुक्त (हिन्दीभाष्य) (चन्द्रमणि)	२५०-००
९.	योगार्यभाष्य (आर्यमुनि)	२०-००
१०.	सांख्यार्यभाष्य (आर्यमुनि)	४०-००
११.	मीमांसार्यभाष्य (३ भाग)	२६०-००
१२.	वैशेषिकार्यभाष्य (आर्यमुनि)	६०-००
१३.	न्यायार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१००-००
१४.	वेदान्तार्यभाष्य (आर्यमुनि)	१२०-००
१५.	महारानी सीता (स्वामी ओमानन्द)	१००-००
१६.	अष्टाध्यायीप्रवचनम् (६ भाग)	६५०-००
१७.	छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	२५०-००
१८.	वृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम् (शिवशंकर)	१५०-००
१९.	उपनिषत्समुच्चय (पं० भीमसेन)	१००-००
२०.	ओरिजनल फिलासफी ऑफ योगा	२५०-००
२१.	मनोविज्ञान तथा शिवसंकल्प	३०-००
२२.	दयानन्दप्रकाश (स्वा० सत्यानन्द)	५०-००
२३.	धर्मनिर्णय (१-४ भाग)	८०-००
२४.	वैदिकविनय (१-३ भाग)	६०-००
२५.	देशभक्तों के बलिदान	१२५-००
२६.	सत्यार्थप्रकाश (दयानन्द)	२००-००
२७.	स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज का योगदान	४०-००
२८.	यजुर्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	१००-००
२९.	सामवेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	८०-००
३०.	अथर्ववेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३१.	ऋग्वेद संहिता (मन्त्रानुक्रमणि)	३५०-००
३२.	सामवेद पदसंहिता	२५-००
३३.	ओमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ	१००-००
३४.	सुखी जीवन (सत्यव्रत)	३०-००
३५.	महापुरुषों के संग में (सत्यव्रत)	१५-००
३६.	घर का वैद्य (१-५ भाग)	१००-००
३७.	दैनंदिनी (सत्यव्रत)	२५-००
३८.	ब्रह्मचर्य के साधन (१-११ भाग)	६०-००
३९.	संस्कृतप्रबोध (आचार्य बलदेव)	२०-००
४०.	संस्कारविधि (स्वामी दयानन्द)	५०-००
४१.	स्वामी ओमानन्द ग्रन्थमाला (४ जिल्दों में)	१२००-००
४२.	दयानन्द लहरी (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४३.	विरजानन्दचरितम् (मेधाव्रत आचार्य)	१५-००
४४.	रामायणार्यभाष्य (दो भाग)	३२०-००
४५.	महाभारतार्यभाष्य (दो भाग)	४५०-००
४६.	स्वामी ओमानन्द जीवन (वेदव्रत शास्त्री)	४००.००

आर.एन.आई. द्वारा रजि. नं. 11757
पंजीकरण संख्या-P/RTK/85-3/2011-13

सुधारक लौटाने का पता :-
गुरुकुल झज्जर, जिला झज्जर (हरयाणा)-124103

ग्राहक संख्या

श्री ____________________

स्थान ____________________

डा० ____________________

जिला ____________________

प्रकाशक आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर ने आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग, रोहतक में मुद्रक-वेदव्रत शास्त्री के प्रबन्ध से छपवाया।